आसान
नमाज़
फरीद बुक डिपो प्रा. लि.
2158 एम.पी. सट्रीट, पटौदी हाऊस दरिया गंज़ दिल्ली–2
फौन 3265406, 3289786, 3289159 फैक्स 3279998

आसान नमाज़

फ़रीद बुक डिपो (प्रा०) लि०
FARID BOOK DEPOT (Pvt.) Ltd.
New Delhi - 110002

नाम किताब

आसान नमाज़

प्रस्तुत कर्ता

(अल-हाज) मुहम्मद नासिर ख़ान

فرید بکڈپو (پرائیویٹ) لمٹیڈ

FARID BOOK DEPOT (Pvt.) Ltd.

Corp. Off : 2158, M.P. Street, Pataudi House, DaryaGanj, New Delhi-2
Phone : (011) 23289786, 23289159 Fax : +91-11-23279998
E-mail : faridexport@gmail.com - Website : www.faridexport.com

Asan Namaz

Edition: 2015

Our Branches:

Delhi : Farid Book Depot (Pvt.) Ltd.
422, Matia Mahal, Jama Masjid, Delhi-6
Ph.: 23256590

Mumbai : Farid Book Depot (Pvt.) Ltd.
216-218, Sardar Patel Road,
Near Khoja Qabristan, Dongri, Mumbai-400009
Ph.: 022-23731786, 23774786

Printed at : Farid Enterprises, Delhi-2

विषय सूची

क्या ?

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम०

शुरू करता हूं मैं अल्लाह के नाम से जो बहुत रहम करने वाला मेहरबान है।

अपनी बात

नह-म-दुहू व नुसल्ली अला रसूलि-हिल-करीम

हम तारीफ़ करते हैं उस खुदा की जो बहुत बड़े मरतबे वाला है। और उस के रसूल करीम स. पर रहमत की दुआ करते हैं।

बाद हम्द व सलात वाज़ेह हो कि किताब 'आसान नमाज़' हिन्दी में हमने ख़ास तौर से हिन्दी जानने वाले हज़रात के लिए आसान ज़ुबान में लिखी है।

चूंकि छोटे-छोटे गांवों और देहातों में दीनी तालीम का ज़्यादा चर्चा नहीं होता या मदरसे वग़ैरह नहीं होते इस लिए हमारे यह मुसलमान भाई अपने बच्चों को उर्दू-अरबी की तालीम नहीं दिला सकते। ऐसे लोग चूंकि खुद भी हिन्दी,मराठी ज़ुबान ही पढ़े होते हैं इस लिए दीनी किताबें भी हिन्दी में तलाश करते हैं।

इस किताब में हर नमाज़ की एक-एक रक्आत की पूरी तफ़सील,कुरआन पाक की ज़रुरी सूरतें और तमाम अरबी इबारतें, तकबीरें ,दुआऐं वग़ैरह तर्जुमे के साथ दी गयी हैं अलावा इस के इस्लाम के कलमे, ज़रुरी मसाइल, रोज़ा, ज़कात और हज के मौज़ू पर भी रोशनी डाली गई है।

बहरहाल मुझे उम्मीद है कि मौजूदा दौर में यह किताब बड़ी मुफ़ीद साबित होगी। और हमारे नावाकिफ़ भाई-बहन इस किताब के ज़रिए नमाज़ सीख कर अपनी दुनिया और आक़िबत

संवार लेंगे।

ज़रूरी हिदायत-अरबी अल्फाज़ का हिन्दी में तलफफुज मुश्किल से अदा होता है क्योंकि हिन्दी में यन,गयन,काफ,सुवाद,तोय,जोय,जाल और जे के लिए कोई ख़ास हरूफ नहीं हैं इस लिए हिन्दी अल्फाज से माअनी बदल जाने का शक है इस लिए तिलावत से कब्ल किसी अरबी जानने वाले शख़्स के सामने एक या दो बार या कुछ ज़्यादा मरतबे इस किताब को पढ़ कर अल्फाज़ दुरुस्त कर लें और जहां तक हो सके सही पढ़ने की कोशिश करें।

इस्लाम की बुनियाद

हजरत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ी॰) से रिवायत है कि नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि इस्लाम १की बुनियाद पाँच चीजों पर रखी गई है।

-मिश्कात,बुखारी व मुस्लिम

१. यह गवाही देना कि अल्लाह तआला के अलावा कोई मआबूद (इबादत के लायक) नहीं और यह गवाही देना कि हजरत मुहम्मद मुस्तुफा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अल्लाह के बंदे और रसूल हैं,

२. नमाज़ कायम करना,

३. रमज़ान शरीफ के रोजे रखना,

४. ज़कात देना,

५. हज करना,

पहला कलमा-ए शहादत तय्यबा या

कलमा-ए-तौहीद

१. अव्वल कलमा तैयबः ला इला-ह इल्लल्लाहो मुहम्मदुर रसूलुल्लाह.

तर्जुमा - अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लायक नहीं मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अल्लाह के रसूल हैं।

२. दोयम कलमा शहादत- अशहदो अल-लाइला-ह इल लल्लाहो वहदहू ला शरी-क लहू व अश ह दो अन-न मुहम्मदन अबदुहू व रसूलुह.

तर्जुमा - गवाही देता हूं मैं कि अल्लाह तआला के सिवा कोई मआबूद नहीं और गवाही देता हूं मैं कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अल्लाह के बन्दे और उसके रसूल हैं।

३. सोयम कलमा तमजीद- सुब्हानल्लाह वल हम्दो लिल्लाहे व-ला इला-ह इल लल्लाहो वल्लाहो अकबर. व-ला हव-ल व-ला कूव्व-त इल्ला बिल्ला हिल अलियिल अज़ीम.

तर्जुमा- पाक अल्लाह है और सब तारीफ़ अल्लाह ही के लिए है और अल्लाह के सिवा कोई मआबूद नहीं और अल्लाह बहुत बुज़ुर्ग (बड़ा) और ताक़त वाला जो बुलंद अज़मत वाला है।

४. चहारुम कलमा तवहीद-लाइला-ह इल लल्लाहो वह दहू ला शरी क लहू लहुल मुल्को व लहुल हम्दो योह यी व योमीतो वहो-व हय्युल ला यमूतो अबदन अबदा. ज़ुल जलाले वज इकराम. बे यदे हिल खै़र. व हो-व अला कुल्ले शैइन क़दीर.

तर्जुमा- अल्लाह के सिवा कोई सच्चा मआबूद नहीं वह एक है और उस का शरीक नहीं सारी हाकमियत (बादशाहत) उसी की है यानी उसी के वास्ते मुल्क और उसी के वास्ते सब तारीफ़ें हैं, वही जिलाता है वही मारता है उसी के हाथ में खै़र है और वह तमाम अश्या पर (हर चीज़ पर) क़ादिर है यानी क़ुदरत रखता

है।

५. पंजुम कलमा असतग़फार : असतगफिरुल्ला रब्बी मिन कुल्ले ज़ंमबीन अज नबतुहो अमदन औ ख ता अन सिर्रन औअला नियतन वअतुबो इलैहे मिनज्जंमबिल्लज़ी आल्मो वमिनज़्ज़ंमबिल्ली ला आलमो इन्नका अन्ता अल्लामुल गुयुबे व सत्तारुल उयुबे व गफ्फारुज़्ज़ुनुब-ए-वला हौला वला कुव्वता इल्ला बिल्लाहिलअलीइल अज़ीम.

तर्जुमा- मैं अल्लाह से माआफी मांगता हुँ।जो मेरा पर्वरदिगार है हर गुनाह की जो मैंने जान बुझ कर या भूल कर या दर प्रदा या खुले तौर पर किया है।और मैं खुदा के हजुर में तौबा करता हुँ उस गुनाह से जो मुझे मालुम है और जो मुझे मालुम नहीं। ए अल्लाह ! बेशक गेब की सब चीज़ें तुझे ही मालुम हैं और तुही अैबों का ढांपने वाला है और तुही गुनाहों को बख्शने वाला है। और गुनाहों से बचाने की तौफीक़ और नेकी करने की ताकत सिर्फ अल्लाह की तरफ से है जो बहुत बुलन्द और बड़ी अज़मत वाला है।

६ छट्ठा कलमा रद्दे कुफ्र- अल्ला हुम-म इन्नी अऊज़ो बे क मिन अन उशरिका बि क शैअंव व अना अअ लमो बेही व अस्तग़फेरो-क लिमा ला आअलमो बेही तुब्तो अन हो व तबर्रअ तो मिनलकुफ़रि वश शिरके वल किज़बे वल गीबते वल बिद अते वन्नमी मतेवल फवा हिशे वल बोहतान वल मआसी कुल्लेहा व अस लमतो व-अकुलो लाइलाह इल्ललाहो मुहम्मदुर्रसुलुलाह।

तर्जुमा- ए- अल्लाह ! मैं तेरी पनाह चाहता हुँ उस से कि किसी चीज़ को तेरा शरीक बनाउँ और मुझे उस का इल्म हो और बखशिश चाहता हुँ उन गुनाहों की जिन का मुझे इल्म नहीं। मैं ने उन से तौबा की और बेज़ार हुआ कुफ्र से और शिर्क से और झूठ से और ग़ीबत से और बिदअत से और चुग़ली से और बेहयाई के तमाम कामों से और तुहमत लगाने से और हर किस्म

की नाफर्मानियों से मैं ईमान लाया और कुफ्र को छोड़ कर कहता हुँ कि एक अल्लाह के सिवा कोई मअबुद नहीं और मुहम्मद सल्ल. अल्लाह के सच्चे रसूल हैं।

ईमान का बयान

इस्लाम का सबसे पहला रुक्न इमान है, यह यक़ीन करना कि अल्लाह तआला के सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं है, वह हर चीज़ पर क़ादिर है और सबका ख़ालिक़ है, और हज़रत मोहम्मद मुस्तफ़ा (स.) अल्लाह तआला के सच्चे रसूल और बंदे हैं, और हिदायत के लिए भेजे गये हैं। कलम-ए-तैयबा और कलम-ए-शहादत में इसी इक़रार का एलान है।

ईमाने मुफ़स्सल

आमन्तो बिल्लाहे व मलाएकतेही व कुतुबेही व रुसूलेही वल यौमिल आखेरे वल क़द्रे खयरिही व शर्रेही मिनल्लाहे तआला वल बासे बअदल मौत.

तर्जुमा - मैं ईमान लाया अल्लाह पर और उसके फरिश्तों पर उसकी किताबो पर और उसके रसूलों पर, और कयामत के दिन पर और उस पर कि अच्छी या बुरी तक़दीर खुदा की तरफ से होती है और मौत के बाद उठाये जाने पर ।

ईमाने मुजम्मिल

आमनतो बिल्लाहे कमा हु-व बे असमाएही व सिफातेही व क़बिलतो जमी-अ अहकामेही इक़रारून बिल्लेसाने व तसदीक़ुम बिलक़ल्ब.

तर्जुमा- ईमान लाया मैं अल्लाह पर जैसा कि वह अपने नामों और सिफ़तों के साथ है क़बूल किये मैंने उस के सारे हुक्मों को ,ज़बान से इक़रार करते हुए और दिल से यक़ीन।

नमाज़ का बयान

नमाज़ इस्लाम का दूसरा रुक्न (हिस्सा) है, ईमान के बाद नमाज़ ही का दर्जा है, क़ुर्आन शरीफ़ में इर्शाद है ''व-अक़ीमुस्सलात वला तकुनु मिनल मुश्रिकीन'' (नमाज़ क़ायम करो और मुश्रिकों में से न बनो) (सुरहरूम)

क़ुर्आन मजीद और हदीस शरीफ़ में नमाज़ पढ़ने की बड़ी ताकीद की गई है और नमाज़ के पढ़ने के बड़े-बड़े सवाब और न पढ़ने के बड़े-बड़े अज़ाब बयान किये गये है।

एक बार हुज़ूर (सल्लल्लाह अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया अगर तुममें से किसी के दर्वाज़े पर नहर बहती हो और रोज़ाना पांच मरतबा उस में नहाये तो क्या उसके बदन पर कुछ मैल रह सकता है? सहाबा रज़ि॰ ने अर्ज़ किया नहीं, उसके बदन पर मैल नहीं रहसकता। हुज़ूर सल्ल॰ ने फरमाया यही हाल पांच वक्त की नमाज़ों का है कि खुदा उनके ज़रिए गुनाहों को मिटा देता है। (बुख़ारी)

हज़रत अबूज़र रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत हैं कि हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाह अलैहि व सल्लम) जाड़े के ज़माने में बाहर तशरीफ़ ले गये, पतझड़ के दिन थे। डालियां पकड़ लीं, पत्ते गिरने लगे, फ़रमाया ऐ अबूज़र मैंने अर्ज़ की हाज़िर हूं,या रसूलल्ला फरमाया मुसल्मान बन्दा अल्लाह के लिये नमाज़ पढ़ता है तो उसके गुनाह इसी तरह गिरते हैं जैसे इस दरख़्त से ये पत्ते। -अहमद-मिरकाल

आं हज़रत सल्ल॰ ने फ़रमाया है नमाज़ दीन का सुतून है

तो जिसने उसे कायम रखा उसने दीन को कायम रखा और जिसने उसे छोड़ दिया उसने दीन को ढा दिया। हजूर स. ने हर चीज़ की एक निशानी होती है,और ईमान की निशानी नमाज है।

हुजूर रसूले अकरम (स.) फ़रमाते हैं, तमाम इबादतों में सब से अफ़जल नमाज़ है, नमाज़ को पंज वक्ता जमाअत के साथ अदा करें और सुस्ती से कभी तर्क न करे। हज़रत मुहम्मद सल्ल. फ़रमाते हैं जो कोई सुस्ती से या जानबूझ कर नमाज़ को अदा नहीं करेगा वह शख़्स कयामत के रोज़ साथ कारून और फ़िरऔन के उठेगा।

हज़रत अली (रज़ि.) फ़रमाते हैं कि हुजूर (स.) का दुनिया से रुखसत होते वक्त जो आख़िरी कलाम था और जिस बात की ताकीद थी तो वह नमाज़ का एहतिमाम था, आपने स. फ़रमाया कि नमाज़ का पूरा एहतिमाम करो इसमें ग़फ़लत न करो।

रसूले करीम सल्लल्लाह अलैह व सल्लम ने फ़रमाया कि जिस कि एक नमाज़ जाती रही उसका इतना बड़ा नुकसान हुआ जैसे किसी के घर के लोग और माल व दौलत सब जाता रहा। *-अत्तगींब वत्तहींब*

नमाज़ की चोरी

एक बार आं हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि सब से बड़ा चोर वह है जो नमाज़ में से चोरी करता है, यह सुनकर सहाबा कराम रज़ि. ने अर्ज़ किया कि या रसूलुल्ला स. नमाज़ की चोरी कैसी? आप सल्ल. ने फ़रमाया नमाज़ कि चोरी यह है कि उसका रुकुअ व सज्दा पूरा न करे।

-मिश्कात

दीन-ए- इस्लाम में नमाज़ का मरतबा

आं हजरत (स.) ने फ़रमाया है कि उसका कोई दीन नहीं जिस की नमाज़ नहीं नमाज़ का मरतबा दीने इस्लाम में वही है जो सर का मरतबा (इन्सान) के बदन में है (यानी जिस तरह कोई शख़्स बग़ैर सर के जिंदा नहीं रह सकता इसी तरह नमाज़ के बग़ैर आदमी ठीक तरह का मुसलमान नहीं हो सकता) यह हदीस 'अत्तर्गीब वत्तर्हीब' की है।

बच्चों को पढ़ाना मां-बाप के ज़िम्मे है।

आं हजरत (स.) ने फ़रमाया है कि अपनी औलाद को नमाज़ का हुकम दो। और सात बरस के हो जायें और नमाज़ न पढ़ने पर उनको मारो और दस बरस के होने पर उन के बिस्तर भी अलग कर दो (एक दूसरे के साथ न सुलाव)

-अबू दाऊद

नमाज़ सही होने की शर्ते

आकिल और बालिग़ मुसलमान पर ख़्वाह मर्द हो या औरत नमाज़ के मुकर्ररा वक्त पर नमाज़ को अदा करना फर्ज़ है और नमाज़ अदा करने के लिए बाज़ ऐसी चीजें हैं, जिनका नमाज़ की सेहत के लिए नमाज़ शुरु करने से पहले होना ज़रुरी है इन्हें नमाज़ की शर्ते कहते हैं।

१. बावुज़ू होना।

२. जनाबत और हैज़ व निफास से पाक होना।

३. जिस्म और कपड़े का निजासत से पाक होना।

४. जिस हिस्से जिस्म का सतर (छुपाना) फ़र्ज़ है उस को छुपाना।

५. क़िबले की तरफ मुंह करना।

६. वक़्त के अन्दर नमाज़ पढ़ना।

७. नमाज़ की नीयत करना। अगर इनमें से कोई बात न पाई गई तो नमाज़ सही न होगी।

नमाज़ सही होने के लिए बहुत सी शर्ते और जरुरी चीज़ें हैं। एक शर्त नमाज़ सही होने के लिए यह है कि नमाज़ी आदमी नजासते हक़ीक़ी से पाक हो लिहाज़ा अब हम तहारत व नजासत का बयान शुरु करते हैं।

तहारत और निजासत का बयान

तहारत यानी पाकी का दीन इस्लाम में बड़ा मरतबा है क़ुर्आन शरीफ में इर्शाद है बिला शुबह अल्लाह दोस्त रखता है बहुत ताबा करने वाले को,हदीस शरीफ में है कि कोई नमाज़ बगैर पाकी के कुबूल नहीं होती और कोई सदका हराम माल से कुबूल नहीं होता।

नजासत यानी नापाकी दूर करने को तहारत कहते हैं। नजासत की दो किसमें हैं।(१) नजासते हकमी।(२)नजासते हक़ीक़ी।

निजासते हकमी- निजासते हकमी उसे कहते हैं जो बज़ाहिर देखने में न आवे लेकिन शरीअत का हुक्म होने की वजह से पाकी हासिल करना फर्ज़ होता है इस की दो किसमें हैं।

(१) हदसे अकबर -यानी गुस्ल फ़र्ज़ होना।

(२) हदसे असग़र - यानी वुज़ू फ़र्ज़ नमाज़ दुरुस्त होने के लिए दोनों से पाक होना फर्ज़ है।

निजासते हक़ीक़ी- निजासते हक़ीक़ी वह है जो देखने में आती है और शरीअत ने उसको नापाक करार दिया है और ऐसी

चीज़ों को अमुमन आदमी भी नापाक और गंदा समझते हैं जैसे पेशाब,पाख़ाना, मनी वग़ैरह,निजासते हक़ीक़ी की दो किसमें हैं (१)निजासते गलीज़ा (२)निजासते ख़फ़ीफ़ा

निजासते ग़लीज़ा- खून और आदमी का पाखाना, पेशाब, मनी,शराब,कुत्ते,बिल्ली का पाखाना,सुवर के जिसम का हर हिस्सा हत्ता कि उसके बाल भी और घोड़े,गधे,ख़च्चर और तमाम हराम जानवरों का पेशाब यह सब निजासते गलीज़ा है और छोटे दूध पीते बच्चे का पेशाब पाख़ाना भी निजासते ग़लीज़ा है।

निजासते ख़फ़ीफ़ा (हलकी नापाकी) हराम परिंदों के बीठ, और हलाल चौपायों मसलन बकरी,गाय,भैंस,बैल,ऊंट और घोड़े का पेशाब निजासते ख़फ़ीफ़ा है।

मस'ला- मछली का खून नजस (नापाक) नहीं है अगर कपड़े या बदन में लग जाये चाहे जितना हो बगैर धोये नमाज़ हो जायेगी मख्खी, खटमल, मछछर का खून भी नापाक नहीं।

पाक करने का तरीक़ा

निजासत अगर कपड़े या बदन में लग जाये चाहे वह गाढ़ी नजासत हो जैसे पाखाना चाहे पतली जैसे नापाक पानी और पेशाब बहर सुरत धोने से पाक हो जाती है,

मस'लः छोटे दूध पीते बच्चे का पेशाब पाख़ाना भी गाढ़ी निजासत है।

मस'लाः अगर कई मरतबा धोने और निजासत के छूट जाने पर भी बदबू नहीं गई या कुछ धब्बा रह गया तब भी कपड़ा पाक हो गया, साबून वग़ैरा लगाकर धब्बा छूड़ाना और बद बू दूर करना ज़रुरी नहीं।

मस'लाः निजासत अगर ऐसी चीज़ में लगी है जिसको

निचोड़ा नहीं जा सकता जैसे लिहाफ, चटाई वग़ैरा तो इस को पाक करने का तरीक़ा यह है कि एक दफा धोकर ठहर जावे जब पानी टपकना बंद हो जाये तो फिर धोये फिर जब पानी टपकना बंद हो तो फिर धोये इसी तरह तीन दफा धोये तो वह चीज़ पाक हो जायेगी।

मस'ला- अगर पेशाब के छींटे सूई की नोक के बराबर पड़ जाएं जो देखने से दिखाई न दे तो इसका कुछ हरज नहीं है। धोना वाजिब नहीं है।

इस्तिनजा का बयान

पाखाना और पेशाब के बाद जो नापाकी बदन में लगी रहे उस के दूर करने को इस्तिनजा कहते हैं। पेशाब करने के बाद मिट्टी के पाक ढेले से पेशाब के क़तरों को खुश्क कर लिया जाए फिर पानी से धोया जाये।

जब पाखाना जाने का इरादा हो तो बिस्मिल्ला कह कर यह पढ़े- अऊज़ु बिल्लाहे मिनल खुबूसे वल खबाइसे (मैं अल्ला की पनाह लेता हूं नर व मादा शयातीन से) इसके बाद बायां पांव बैतुलख़ला में रखे। बायें पांव पर बोझ देकर बैठें। अपनी शर्मगाह और निजासत की तरफ न देखें और फारिग़ होकर बायें हाथ से इस्तिनजा करे फिर बैतुल खला से अव्वल दाहिना पांव बाहर निकाले फिर बायां और बाहर आने के बाद "गुफरानका" (ऐ अल्ला मैं तुझसे मग़फिरत का सवाल करता हूं) कहे फिर यह पढ़े-

अलहम्दो लिल्लाहिल्लजी अज़ ह-ब अन्निल अज़ा आफानी।

(मिश्कात)

तर्जुमा- सब तारीफ अल्लाह ही के लिए है जिसने मुझसे दूर कर दिया गंदगी को और मुझे आराम दिया।

मस'ला- दाहिने हाथ से इस्तिनजा करना और हड्डी से इस्तिनजा करना मना है।

मस'ला- जिस चीज़ को आदमी या जानवर खाते हों उस से इस्तंजा करना मना है।

मस'ला-पाखाना और पेशाब करने वक्त बात करना मना है।

पानी का बयान

आसमान से बरसे हुए पानी और नदी- नाले, चश्मे, कुअे, तालाब और दरयावों के पानी से वुज़ू और गुस्ल करना दुरुस्त है चाहे मीठा पानी हो या खारा।

मस'ला- जिस पानी में निजासत पड़ जाये इससे वुज़ू गुस्ल कुछ दुरुस्त नहीं, चाहे वह निजासत थोड़ी हो या बहुत, अल्बत्ता बहता हुआ पानी हो तो वह निजासत के पड़ने से नापाक नहीं होता जब तक कि इसके रंग या मज़ा बदल गया या बू में फर्क न आए, जब निजासत की वजह से रंग या बू आने लगी तो बहता हुआ पानी भी नजस हो जायेगा इससे वुज़ू गुस्ल दुरुस्त नहीं होगा और जो पानी घास के तिंके, पत्ते वग़ैरह बहा कर ले जाए तो वह बहता पानी कहलायेगा चाहे कितना ही आहिस्ता बहता हो।

मस'ला- जिस पानी में ऐसी जानदार चीज़ मर जाए जिसमे खुन नहीं होता या बाहर मर कर गिर जाए तो पानी नजस (नापाक) नहीं होता जैसे मक्खी, मच्छर लऊ, बिच्छू, शहद की मक्खी या इस किसम की और जो चीज़ें हो।

मस'ला- जिस जानदार की पैदाईश पानी की हो और पानी ही में रहता हो जैसे मछली, दर्याई मेंडक, कछुवा, केकड़ा वग़ैरह अगर पानी में मर जाए तो पानी नापाक नहीं होता।

खाल का बयान

मस'ला- मुरदार की खाल को जब धुप में सुखा डाले या कुछ दवा वगैरह लगाकर दुरुस्त करते जिससे खुश्क हो जाए और नापाक तरी खतम हो जाए और रखने से खराब न हो तो खाल इस तरह से पाक हो जाती है। इस पर नमाज़ पढ़ना और मशक बना कर पानी भर कर रखना और इस से वुजू करना, पीना, पकाना सब दुरुस्त है लेकिन इन्सान और सुवर की खाल किसी तरह भी पाक नहीं हो सकती और सब खाले पाक हो जाती है और इन्सान और सुवर की खाल को काम में लाना, इस्तेमाल करना सखत गुनाह है।

वुजू का बयान

वुजू के फर्ज़- वुजू के फर्ज़ चार हैं।

१. बावुजू होना।

२. पेशानी के बालों में ठुड्डी के नीचे तक और एक कान से दुसरे कान तक मुंह धोना।

३. दोनों हाथों को कुहनीयों समेत धोना।

४. चौथाई सर का मसह करना।

५. दोनों पावं टखनों समेत धोना कहीं बाल बराबर खुश्की न रहे।

वुजू की सुन्नतें-वुजू में यह चीज़े सुन्नत हैं।

१. नीयत करना।

२. बिस्मिल्ला हिर्रहमा निर्रहीम पढ़ना।

३. पहले तीन बार दोनों हाथों को गट्टों तक धोना।

४. मिस्वाक करना।

५. तीन बार कुल्ली करना।

६. तीन बार नाक में पानी डालना।

७. दाढ़ी का खिलाल करना।

८. हाथ पावं की उगलियों का खिलाल करना।

६. हर अजु को तीन बार धोना।

१०. एक बार तमाम सिर का मसह करना।

११. दोनों कानों का मसह करना।

१२. तरतीब से वुजू करना यानी पहले मुंह फिर कुहनियों तक हाथ धोना फिर सर का मसह करना फिर पावं धोना।

१३. जल्दी- जल्दी वुजू करना यानी एक अजु खुश्क न होने पाये के दुसरा धोनां

वुजू के मकरुहात- वुजू में यह चीज़े मकरुह हैं।

१. नापाक जगह पर वुजू करना।

२. सीधे हाथ से नाक साफ करना।

३. वुजू करने में दुनिया की बातें करना।

४. सुन्नत के खिलाफ वुजू करना।

५. ज़्यादा पानी बहाना।

६. जोर से झपके मारना।

वुजू के मुस्तहिबात- यह चीज़ें वुजू में मुस्तहिब हैं।

१. दाई तरफ से शुरु करना (बाज आलीमों ने इसको सुन्नत कहा है।)

२. गरदन का मसह करना।

३. वुजू के काम खुद करना और दुसरे की मदद न लेना।

४. किबले की तरफ़ मुंह करके बैठना।

५. पाक और ऊँची जगह पर बैठ कर वुजू करना।

६.   मल-मल कर धोना।

वुजू तोड़ने वाली चीज़े- इन चीज़ो से वुजू टूटता है।

१.   पाखाना या पेशाब करना या इन दोनों रास्तों से किसी और चीज़ का निकलना।

२.   रियाह याने हवा का पीछे से निकलना।

३.   बदंन के किसी भी मुकाम से खुन या पीप का निकल कर बह जाना।

४.   मुंह भर के(उल्टी) आना।

५.   ऐसे सहारे से सोना कि अगर सहारा हटा दिया जाए तो गिर पड़े।

६.   बिमारी या किसी और वजह से बेहोश हो जाना।

७.   मजनू या दीवाना हो जाना।

८.   नमाज़ में इतने ज़ोर से हंसना के बराबर वाला सुन ले यानी कहकहा मार कर हंसना।

वुजू का तरीक़ा

जब वुजू करने का इरादा हो तो साफ बर्तन में पाक पानी लेकर पाक व साफ ऊंची जगह पर बैठो। किब्ले की तरफ मुंह कर लो तो अच्छा है और उसका मौका न हो तो कोई हर्ज नहीं। आस्तीनें कुहनियों से ऊपर तक चढ़ा लो फिर बिस्मिल्ला हिर्रहमा निर्रहीम पढ़ो और तीन बार गट्टों तक दोनों हाथ धोवो फिर तीन बार कुल्ली करो, और मिस्वाक करो। मिस्वाक न हो तो उंगली से दांत मल लो फिर तीन बार नाक में पानी डाल कर बायें हाथ की छोटी उंगली से नाक साफ करो। फिर तीन मर्तबा मुंह धोवो मुंह पर पानी ज़ोर से न मारो बल्कि आहिस्ता से पेशानी के

बालों से ठुड्डी के नीचे तक और इधर-उधर दोनों कानों तक मुंह धोना चाहिए। फिर कुहनियों समेत दोनो हाथ धोवो। पहले दाहिना हाथ तीन बार फिर बायां हाथ तीन बार धोना चाहिए फिर हाथ पानी से तर करके (भीगोकर) सिर का मसह करो। फिर कानों का मसह करो फिर गर्दन का मसह करो। मसह सिर्फ एक मर्तबा करना चाहिए। फिर तीन मर्तबा दोनों पावं टखनों समेत धोवो, पहले दाहिना पावं फिर बायां पांव धोना चाहिए वुज़ू से फारिग होने के बाद कलमए शहदत पढ़ो।

गुसल का बयान

गुसल का तरीका- जब गुस्ल क़रने का इरादा हो तो पहले दोनों हाथ गट्टों तक धोवे फिर इस्तिनजा करे और ज़ाहरी नापाकी किसी जगह लगी हो तो उसे धो डाले फिर वुज़ू करे जैसे नमाज़ के लिए वुज़ू करते हैं। खुब मुंह भर कर कुल्ली करे रोज़ा न हो तो ग़रारा भी करे और नाक में खुब ख्याल करके पानी डाले अगर पत्थर या पक्की ज़मीन पर गुस्ल करे तो दोनों पावं भी इसी वुज़ू में धो ले वुज़ू के बाद थोड़ा सा पानी लेकर सारे बदन को, फिर तीन मर्तबा सर पर पानी डाले और उसके बाद दाहिने कंधे पर फिर बायें कंधे पर तीन बार पानी डाले और हर जगह पानी पहुंचा देवे, बाल बराबर भी कोई जगह सूखी रह जायेगी तो गुस्ल न होगा, फिर इस जगह से हट जावे और पावं धो लेवे, अगर वुज़ू के वक्त पाव धो लिए थे तो अब पाव धोने की हाजत नहीं।

मस'ला- अगर गुस्ल के बाद याद आए कि फलाँ जगह पानी न पंहुचा था तो फिर से पुरा गुस्ल करने की ज़रुरत नहीं बल्कि खास उसी जगह को धो ले अगर कुल्ली करना या नाक में पानी डालना भूल जाए तो खास कमी को पुरा करने से गुस्ल

पूरा हो जायेगा।

मस'ला-गुस्ल करते वक्त जो वुजू किया है इससे नमाज़ पढ़ सकते हैं।

जूमा का गुस्ल

जुमा के दिन नमाज़ से पहले गुस्ल करना सुन्नत है। हदीस शरीफ में इसकी बड़ी ताकीद आई है।

मस'ला- बे वुजू कुर्आन शरीफ पढ़ना दुरुस्त है मगर छूना दुरुस्त नहीं और जिन पर गुस्ल फर्ज़ हो उसके लिए न कुर्आन शरीफ पढ़ने की इजाज़त है न छूने की, हां अगर जुज़दान के साथ छूये तो छू सकता है और इसका मस्जिद में दाखिल होना भी दुरुस्त नहीं।

मस'ला- हैज़ और निफास वाली औरत और जिस पर गुस्ल फर्ज़ हो कुर्आन शरीफ के अलावा दुआ, ज़िकर और तस्बिह पढ़ सकती है।

मस'ला- हैज़ की मुद्दत कम से कम तीन दिन है तीन दिन से कम में अगर खतम हो गया और हैज़ समझ कर नमाज़ छोड़ दी थी तो उस की कज़ा पढ़े और अगर पूरे दस दिन आकर भी खून बंद न हो तब भी गुस्ल करके नमाज़ रोज़ा शुरु करे।

मस'ला- निफास की ज़ियादा से ज़ियादा मुद्दत चालीस दिन है चालीस दिन से पहले जब भी खून आना बंद हो जाए गुस्ल करके नमाज़, रोज़ा शुरु कर देवे और चालीस दिन के बाद भी खून बंद न हो तो पूरे चालीस दिन हो जाने पर गुस्ल कर के नमाज़, रोज़ा शूरु करे।

मस'ला- औरतो में यह रिवाज है कि निफास वाली औरत से खवाह मखवाह चालीस दिन तक नमाज़ रोज़ा छुड़ाए रखती

हैं चाहे खून बंद हो या न हो। यह तरीका शरीअत की रु से ग़लत है। अगर दो दिन में खून बंद हो जाए तब भी गुस्ल करके नमाज़ पढ़े और रोज़ा रखे।

मस'ला- हैज़ वाली औरत न कुर्आन छू सकती है। और न पढ़ सकती है न उसका मस्जिद में दाखिल होना दुरुस्त है न उसका मर्द उससे सोहबत कर सकता है जब पाक होगी तो यह दुरुस्त है।

मस'ला- हैज़ व निफास वाली औरत के साथ सोहबत करना हराम है मगर दिल लगी करना, चूमना, साथ लेटना उसके शौहर के लिए सब दुरुस्त है लेकिन औरत के नाफ से ले कर गुटने तक के हिस्से को हाथ न लगाए।

गुस्ल के फर्ज़- गुस्ल में तीन फर्ज़ हैं। (१) मुंह भर कर कुल्ली करना, (२) नाक में पानी डालना (३) तमाम बदन पर एक मर्तबा पानी बहाना।

गुस्ल की सुन्नतें -(१) पाक होने की नीयत करना,(२) पहले बदन पर जिस निजासत लगी हो उसको धोना और इस्तिनजा करना (३) फिर वुज़ू करना (४) सारे बदन पर तीन बार पानी बहाना (५) बदन को अच्छी तरह मलना।

गुस्ल के मकरुहात- (१) पानी ज़ियादा बहाना (२) सतर खुला होने की हालत में बात करना या किबले की तरफ मुंह करना (३) सुन्नत के खिलाफ करना।

जिन सूरतों में गुस्ल फर्ज़ है- (१) मनी का शहवत से निकलना (२) सोहबत करना (३) औरत का हैज़ से पाक होना (४) एहतलाम होना (५) निफास का बंद होना।

जो गुस्ल वाजिब है- (१) किसी काफ़िर का इस्लाम लाने के बाद गुस्ल करना (२) मुसलमान मुर्दे की लाश को गुस्ल देना।

जो गुस्ल सुन्नत है- (१) जुमे की नमाज़ के लिए गुस्ल करना (२) दोनों ईदों की नमाज़ के लिए गुस्ल करना (३) हज का एहराम बाधनें से पहले गुस्ल करना (४) अराफात में वकुफ (ठहरने) के लिए गुस्ल करना।

जो गुस्ल मुस्तहिब है- माहे शाबान की पंदरहवीं रात यानी शबबरात में गुस्ल करना (२) अरफे की रात में गुस्ल करना (३) सुरज ग्रहन और चांद ग्रहन की नमाज़ के लिए गुस्ल करना (५) मय्यत को गुस्ल देने वाले का गुस्ल कर लेना।

गुस्ल की नीयत

जनाबत के गुस्ल की नीयत- नबैतो अन अग तसिला मिन गुस्लिल ज-न-बतेले-रफेइल ह- द- से।

तर्जुमा- नीयत करता हूं मैं नहाने की जनाबत के गुस्ल से नापाकी दूर करने के लिए। जुमअ के गुस्ल की नीयत- नवैतो अन अग तसिला मिन गुस्लिल जुमअते ले रफेइल ह-द-से

तर्जुमा- नीयत करता हूं मैं नहाने की जुमअ के गुस्ल से नापाकी दूर करने के लिए।

एक ज़रुरी बात

ये नीयत तमाम गुस्लों के लिए काफी है। गुस्ल करने वाले को चाहिए कि जिस किस्म का गुस्ल करना हो उसका नाम ले मगर हैज, या निफास, या जुमअ, या इदेन, या एहराम का गुस्ल हो तो ऊपर लिखी हुई तमाम नीयत पढ़े। लेकिन जहां मिन गुस्लील ज-न-बते, लिखा है वहां अगर हैज़ का गुस्ल है तो-मिन गुस्लील हैज़ अगर निफास का हो तो - मिन गुस्लील निफास, अगर जुमअ का हो तो-मिन गुस्लील जुमअते, अगर ईद का हो तो-मिन गुस्लील ईदे, अगर एहराम का हो तो-मिन गुस्लील एहरामे, इस तरह और बाकी की तमाम नीयात पुरी पढ़े।

तयम्मुम का बयान

जिसको वुजू या गुस्ल करने की ज़रुरत हो और पानी न मिले ऐसी सूरत में शरीअते इस्लाम ने हमें तयम्मुम करने की इजाज़त दी है, मसलन-इन्सान सफर में हो और पानी दो मील दूर हो, बीमारी हो और पानी लगने से बीमारी बढ़ने या तकलीफ ज़ियादा हो जाने का डर हो, पानी ऐसी जगह हो जहां तक जाने में जान जाने का खतरा हो, आदमी पानी के लिए पैदल चले तो नमाज़ का वक़्त कज़ा हो जाए, कुवां सामने हो मगर पानी के लिए डोल या रस्सी न हो सिर्फ इस कद्र ही पानी हो कि अगर उससे वूजू कर ले तो पीने के लिए पानी नहीं रहेगा और प्यास से हलाक हो जाने का अन्देशा हो ऐसी तमाम सूरतों में तयम्मुम कर लेना चाहिए। ये तयम्मुम वुजू का बदल बन जायेगा, यही नहीं बल्कि गुस्ल वाजिब हो और पानी नहीं मिल सकता हो, या पानी के इस्तेमाल से कोई खतरा लाहक हो तो उसके लिए भी तयम्मुम कर लेना जाइज़ है।

अपने तजर्बे से गुमान हो जाये या किसी तजर्बेकार हकीम या डाक्टर के कहने से मालूम हो कि पानी के इस्तेमाल करने से बीमार हो जायेगा या मर्ज़ बढ़ जायेगा तो तयम्मुम करना दुरुस्त है सिर्फ अपने ख्याल या तकलीफ के वहेम से तयम्मुम करना दुरुस्त नहीं।

तयम्मुम का तरीका- तयम्मुम में नीयत फ़र्ज़ है यानी नीयत करे कि मैं नापाकी दूर करने के लिए या नमाज़ पढ़ने के लिए तयम्मुम करता हूं, नीयत के बाद दोनों हाथों को पाक मिट्टी पर मारे फिर हाथ झाड़ कर तमाम मुंह पर मले और जितना हिस्सा वुजू में धोया जाता है उतने हिस्से पर हाथ फेर ले कि दोबारा मिट्टी पर हाथ मार कर हाथों को कुहनीयों तक मले और उंगलीयों का खलाल भी करें दाढ़ी का खलाल करना भी सुन्नत है अगर अंगुठी पहने हुए हो तो उसको उतारना या हिलाना

ज़रुरी नहीं।

वुज़ू और गुस्ल के लिए तयम्मुम करना दुरुस्त है और दोनों के तयम्मुम का एक ही तरीका है।

मस'ला- पत्थर पर तयम्मुम जाइज़ है चाहे इस पर मिट्टी या गोबर न हो लेकिन कपड़े पर जाइज़ नहीं, कुछ लोग रेल में सफर करते वक़्त पानी न मिलने पर अपनी चादर पर तयम्मुम कर लेते है यह जाइज़ नहीं।

जो चीज़े वुज़ू को तोड़ती है उन से तयम्मुम भी टूट जाता है पानी का मिलना और उसका ईस्तेमाल के लायक होना भी तयम्मुम को तोड़ देता है।

पाँच वक़्त की नमाज़ का वक़्त

फज्र का वक़्त सुबह सादिक से शुरू होकर सूरज निकलने तक बाकी रहता है और ज़ोहर का वक़्त सूरज ढल जाने के बाद शुरू होता है, जब तक हर चीज का साया उस के दुगना न हो उस का वक़्त बाकी होता है। दो चंद साया के मानी यह है कि असली साये के अलावा, साया अस्ली वह है जो ठीक ज़वाल के वक़्त होता है। ज़ोहर का वक़्त ख़तम होने के बाद असर का वक़्त शुरू हो जाता है और सूरज छुपने तक बाकी रहता है लेकिन जब सूरज ज़र्द हो जाए तो असर का वक़्त मकरू हो जाता है जब सूरज छुप जाए तो मग़रिब का वक़्त शुरू हो जाता है जो शफक (सूरज डूबते वक़्त आसमान पे जो लाली होती है) गायब होने तक रहता है, हिंद व पाकिस्तान के इलाकों में कम से कम सवा घंटा और ज़ियादा से ज़ियादा डेढ़ घंटा मग़रिब का वक़्त रहता है। मग़रिब का वक़्त ख़तम होते ही इशा का वक़्त शुरु हो जाता जो तुलू सुबह तक़ रहता है। लेकिन आधी रात के बाद इशा का वक़्त मकरुह हो जाता है।

मस'ला- जो वक़्त इशा का है वही नमाज़े वित्र का भी है

मगर वित्र की नमाज़ इशा के फर्ज़ो से पहले नहीं पढ़ी जा सकती।

नमाज़ के फ़्राइज़- नमाज़ के चौदह फ़्राइज़ है जिन में से चंद ऐसे है जिन का नमाज़ से पहले होना ज़रूरी है और उन को नमाज़ के खारिजी फ़्राइज़ कहते है और फ़्राइज़े नमाज़ भी कहा जाता है और चंद फ़्राइज़ ऐसे हैं जो दाखिल नमाज़ है सब की फेहरिस्त यह है।

(१)बदन का पाक होना (२) कपड़ों का पाक होना (३) सतर-ए-औरत यानी मरदों को नाफ से घुटनों तक और औरतों को चेहरे और हथेलीयों और कदमों के अलावा तमाम बदन का ढकना फ़र्ज़ है (४) नमाज़ की जगह का पाक होना (५) नमाज़ का वक़्त होना (६) किब्ले की तरफ रुख करना (७) नमाज़ की नीयत करना (८) तकबीरे तहरीमा कहना (६) कयाम यानी खड़ा होना (१०) किराअत यानी एक बड़ी आयत या तीन छोटी आयतें या एक छोटी सूरत पढ़ना (११) रुकूअ करना (१२) सजदा करना (१३) कादा करना (१४) अपने इरादे से नमाज़ ख़तम करना अगर इन में से कोई चीज़ भी जान कर या भूल कर रह जाए तो सज्दा सहु करने से भी नमाज़ न होगी।

नमाज़ के वाजिबात- (१) अलहम्दो पढ़ना (२) और उस के साथ कोई सूरत मिलाना (३) फ़र्ज़ो की पहली दो रकातों में क़िराअत करना (४) अलहम्दो को सूरत से पहले पढ़ना (५) रुकूअ कर के सीधा खड़ा होना (६) दोनों सज्दों के दर्मियान बैठना (७) पहला कादा करना (८) अत्तहय्यात पढ़ना (६) लफ़्ज़ सलाम से नमाज़ खतम करना (१०) जोहर और असर में क़िराअत आहिस्ता पढ़ना (११) इमाम के लिए मगरिब व इशा की पहली दो रकाअतों में और फ़ज्र व जुमअ व इदैन और तरावीह की सब रकअतों में बुलंद आवाज़ के साथ किराअत पढ़ना (१२) वित्र में दुआए क़ुनुत पढ़ना (१३) इदैन में छे तकबीर ज़ायद कहना

वाजिबात में से अगर कोई वाजिब भूल कर छूट जाए तो सज्दा सहु करना वाजिब होगा अगर जान बूझ कर किसी वाजिब को छोड़ दिया तो दोबारा नमाज़ पढ़ना वाजिब है सज्दा सहु से भी काम नहीं चलेगा।

नमाज़ तोड़ने वाली चीज़ें- इन चीज़ों के करने से नमाज़ टूट जाती है। बात करना चाहे थोड़ी हो या बहुत, जानबूझ कर या भूल कर, ज़बान से सलाम करना या सलाम का जवाब देना, छींकने वाले के जवाब में यारहमतुल्लाह कहना, रेज की खबर सुनकर इन्नालिल्लाही व इन्ना इलैही राजिऊन पूरा या थोड़ा सा पढ़ना या अच्छी ख़बर सुन कर अल्हम्दोलिल्ला कहना या अजीब चीज़ सुन कर सुब्हानल्ला कहना दुख तकलीफ की वजह से आह और ओह या उफ करना, अपने इमाम के सिवा किसी दूसरे को लुक्मा देना, कुर्आन शरीफ देख कर पढ़ना, अल्हम्दो शरीफ या सुरत में ऐसी गलती करना जिससे नमाज़ टूट जाती हो (जिसकी तफ्सील बड़ी किताबों में लिखी है) ऐसा काम करना जिस से देखने वाला यह समझे कि यह आदमी नमाज़ नहीं पढ़ रहा है। या मसलन दोनों हाथों से काम करना, जानबूझ कर या भूल कर कुछ खाना-पीना, किब्ले से सीना फिर जाना, दर्द या मुसीबत की वजह से इस तरह रोना कि आवाज़ में हरुफ निकल जाये, नमाज़ में हंसना, इमाम से आगे बढ़ जाना, यह चंद नमाज़ को तोड़ने वाली चीज़ें लिख दिया हूं बड़ी किताबों में और भी हैं।

नमाज़ की सुन्नतें- यह चीज़ें नमाज़ में सुन्नत हैं तकबीरे तहरीमा के वक़्त दोनों हाथ कानों तक उठाना, मर्दो का नाफ के नीचे और औरतों का सीने पर हाथ बांधना, सना यानी सुब्हा न कल्ला हुम्मा आखिर तक पढ़ना, अऊजू बिल्ला (पूरी) और बिस्मिल्ला (पूरी) पढ़ना रुकू और सज्दा करते वक़्त बल्कि हर एक रुकन से दूसरे रुकन में जाने के वक़्त अल्लाहु अकबर कहना। रुकू से उठते वक़्त समि अल्लाहु लिमन हमिदा और रब्बना ल लकहम्दो कहना रुकुअ में सुब्हान सब्बीयल अज़ीम

कम से कम तीन मरतबा कहना और सज्दे में कम से कम तीन बार सुब्हा-न रब्बीयल आला कहना दोनों सजदों के दर्मियान और अतहियात के लिए औरतों के बायें पांव सीधी तरफ निकाल कर कुल्हों पर बैठना, दरूद शरीफ पढ़ना, दरूद शरीफ के बाद दुआ पढ़ना, सलाम के वक्त दायें बायें मुंह फेरना।

नमाज़ के मुस्तहिबात

अगर चादर ओढ़े हो तो कानों तक हाथ उठाने के लिए मर्द को चादर से हाथ निकालना, जहां तक मुम्किन हो खांसी को रोकना जमाई आए तो मुंह बन्द करना खड़े होने की हालत में सज्दे की जगह और रुकुअ में कदमों पर और सजदे में नाक पर और बैठे हुए गोद में और सलाम के वक्त कांधो पर नज़र रखना।

नमाज़ के मकरूहात

यह चीज़ें नमाज में मकरूह हैं- (१) कुलहे पर हाथ रखना (२) आस्तीन से बाहर हाथ निकाले रखना (३) कपड़ा समेटना (४)जिस्म या कपड़े से खेलना (५) उंगलियां चटखाना (६) दाये बायें गर्दन मोडना (७) अंगड़ाई लेना (८) कुत्ते की तरह बैठना (६) मर्द का सज्दे में हाथ ज़मीन पर बिछाना (१०) सज्दे में (मर्दों के लिए) पेट को रानों से मिलाना बगैर उजर (तकलीफ) के, चार ज़ानों होकर बैठना (आलटी पालटी मार कर बैठना) (११) इमाम का मेहराव के अन्दर खड़ा होना (१२) सफ से अलग तन्हा खड़ा रहना (१३) सामने या सर पर तस्वीर होना (१४) तस्वीर वाले कपड़े में नमाज़ पढ़ना (१५) कंदों पर चादर या कोई कपड़ा लटकाना (१६) पेशाब पाखाना या ज़्यादा भूख लगी हो और नमाज़ (१७) सर खोल कर नमाज़ में खड़ा होना

(१८) आंखें बन्द करके नमाज़ पढ़ना।

अज़ान का बयान

फर्ज नमाज़ों से पहले अज़ान देना सुन्नते मौक्किदा है और इस्लाम की शराह में (उसूलों में) दाखिल है।

जो आदमी अज़ान दे उसे चाहिए कि किसी ऊंची जगह किब्ले की तरफ मुंह करके खड़ा हो और अपने दोनों कान में शहादत की उंगली डाल कर ऊंची आवाज़ से यह कलमात (अलफाज़) कहे-

अल्लाहु अकबर अल्लाहु अकबर

अल्लाहु अकबर अल्लाहु अकबर

अश्हदु अल्ला इला हा इल्लल्लाह

अश्हदु अल्ला इला हा इल्लल्लाह

अश्हदु अन्न मुहम्मदर रसूलुल्ला

अश्हदु अन्न मुहम्मदर रसूलुल्ला

फिर दाहनी तरफ मुंह करते हुए दो मर्तबा यह अलफाज़ कहे-

हैया अलस्सलह हैया अलस्सलह इसके बाद बायें तरफ मुंह करते हुए हैया अलल्फलाह हैया अलल्फलाह अगर सुबह की अज़ान हो तो हैया अलल्फलाह के बाद दो मर्तबा यह अलफाज़ कहे-

'अस्सलातु खैरुम्मि नन्नौम' फिर यह कहे अल्लाहु अकबर अल्लाहु अकबर ला इला ह इल्लल्लाह।

जब अज़ान की आवाज़ सुने तो यह पढ़े-

अश हदु अल्ला इलाह इल्लल्लाहु वहदहु ला शरी-क-ल-हु व

अश हदु अन्न मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुहु रदीतु बिल्लाहे रब्बौ व वि मुहम्मदर रसुलव व बिल्इस्लामे दीना।

तर्जुमा- मैं गवाही देता हूं कि अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लायक नहीं है वह अकेला है, उस का कोई शरीक नहीं और मैं गवाही देता हूं कि मुहम्मद उसके बंदे और रसूल हैं। मैं राज़ी हूँ अल्ला को रब मानने पर और मुहम्मद को रसुल मानने पर और इस्लाम को दीन मानने पर।

फिर जो मौअज़्ज़िन (अज़ान देने वाला) कहे वही कहता जावे मगर हैया अलल्स्सलह हैया अलल्फलाह के जवाब में ला हौल वला कुव्व-त-इल्ला बिल्लाह कहे और अज़ान ख़तम होने पर दरूद शरीफ क़े बाद यह दुआ पढ़े-

अज़ान के बाद की दुआ

अल्लाह हुम्म रब्ब हाज़िहिद दअ वतित ताम्मते वस्सलातिल काइमते आते मुहम्मद निल्वसिलत वल फज़ीलतह वब अस हु मकामम्महमुदा निल्लजी व अत्तहु वुजू कना शफा अतहु यौमल कियामतिह इन्न-क-ला तुख्लिफुल मिआद।

तर्जुमा- ऐ अल्लाह जो रब है इस कामिल बुलावे का और कायम होने वाली नमाज़ का, इनायत फर्मा हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को वसीला और फ़ज़ीलत और खड़ा कर उन को मकामे महमूद में जिस का तुम ने उन से वादा फर्माया है और नसीब करना हम को उन की शफाअत कयामत के दिन, बेशक तू वादा खिलाफ नहीं फ़र्माता।

अकामता या तकबीर- जब जमात की नमाज़ खड़ी होती है तो पहले तकबीर कहते है वह भी अज़ान ही की तरह है सिर्फ इतना फर्क़ है हैया अलल्फलाह के बाद अकामत में दो बार कदका मतिस्सलात कहा जाता है।

मस्ला- अज़ान ठहर ठहर कर और अकामत(तकबीर) जल्दी जल्दी कहते हैं।

मसला- अकामत का जवाब देना भी मुस्तहिब है, अकामत कहने वाला जो कहे वही कहते जावे और हैया अलस्सलाह और हैया अल्लफलाह के जवाब में लाहौ-ल-वला कुव्वता इल्ला बिल्लाह कहे और कदका मतिस्सलात के जवाब में आक़ा-म-अल्लाहु व अदा करे।

नीयत का बयान

जो नमाज़ पढ़नी हो उसकी नीयत करना फ़र्ज़ है मस्लन नीयत करे कि फलाह वक्त की कर्ज़ या सुन्नत पढ़ता हूँ अगर इमाम के पीछे पढ़ना हो तो उसके साथ की भी नीयत करना लाज़िम है लेकिन इमाम को मुकतदियों का इमाम होने की नीयत करना लाज़िम नहीं है और नफ़िल नमाज़ के लिए नमाज़ की नीयत क़ाफी है।

नीयत दिल के इरादे का नाम है सिर्फ़ दिल से नमाज़ की नीयत कर लेना काफी है लेकिन अगर ज़बान से कह लेवे तो यह भी दुरुस्त है अरबी में नीयत करना भी ज़रुरी नहीं है अपनी मादरी जबान में कर लेना काफी है।

नमाज़ पढ़ने का तरीक़ा

जब नमाज़ पढ़ने का इरादा करो तो पहले अपना बदन हर किसम की नापाकी से पाक करो और पाक साफ कपड़े पहन कर पाक जगह पर किब्लेह की तरफ मुंह करके खड़े हो फिर जो नमाज़ पढ़नी है उसकी नीयत करो फिर दोनों हाथ इस तरह कानों तक उठाओ कि अंगुठे कानों की लौ के मुकाबिल हों, उंगलीयाँ खुली रहें इस के बाद तकबीर-ए-तहरीमा यानी अल्लाह अकबर (अल्लाह सब से बड़ा है) कह कर दोनों हाथ नाफ के नीचे इस तरह बांध लो कि सीधे हाथ की हथेली बायें हाथ की

पुश्त पर रहे यानी सी'' हाथ की हथेली बाय हाथ की हथेली के ऊपर रहे और अंगुठे और छुंगलिया के हलके से बायें हाथ के पहुंचे को पकड़ लो और बाकी तीन उंगलीयां कलाई पर बिछी रहे और नज़र सज्देह की जगह पर रहे। हाथ बांध कर सना पढ़ो-

सना- सुब्हा-न-कअल्ला हुम्मा व बिहम्दि-क-व तबार-र-क-स्मु-क-व तआला जदद्-क-व ला इलाह गैरू-क।

तर्जुमा - ऐ अल्लाह मैं तेरी पाकी बयान करता हूं और तेरी तारीफ करता हूं और तेरा नाम बा बरकत है और बुलंद (ऊंचा) है तेरी शान, और नहीं है कोई इबादत के लायक तेरे सिवा फिर तअउज़ पढ़ो यानी-

अउजु बिल्लाहे मिनश्शैतानिर्रजीम

तर्जुमा- मैं पनाह देता हुँ अल्लाह की शैतान और मरदूद से और इसके बाद तस्मिया पढ़ो यानी-

बिस्मिल्लाह हिर्रहमानिर्रहीम

तर्जुमा- अल्लाह के नाम से शुरू करता हूं जो बड़ा महरबान निहायत रहम वाला है और फिर सुरह फातिहा पढ़ो-

अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल्आलमीन. अर्रहमा निर्रहीम. मालिकि यौमिद्दिन. इय्या-क-नअबुदु व इय्या-क-नस्तयीन. इहदि नस्सिरातल मुस्तकीम. सिरातल लज़ी-न अन्अम्त अलैहिम गैरिल मग्दुबि अलैहीम व लज़्ज़ोलीन.

तर्जुमा- सब तारीफें अल्लाह के लिए हैं जो पालने वाला है तमाम दुनिया का, मेहरबान बहुत ज़्यादा रहम वाला, मालिक है इनसाफ के दिन का हम तेरी ही इबादत करते हैं और तुझ ही से मदद चाहते हैं हम को सीधे रास्ते पर चला उन लोगों के रास्ते पर जिन पर तुने इनाम फर्माया। न उन की तरह पर जिन पर तेरा गज़ब नाज़िल हुआ और न गुम्राहों के रास्ते पर।

जब सुरह फातिहा खतम करो तो आहिस्ता से आमीन कहो, फिर कोई सुरत पढ़ो (लेकिन अगर तुम इमाम के पीछे

नमाज़ पढ़ रहे हो तो सिर्फ सना(सुब्हा न कल्ला हुम्म) पढ़ कर खमोश खड़े रहो) तअएज़, तस्मिया और अल्हम्दु और सुरत कुछ न पढ़ो यह सब इमाम पढ़ेगा अकेले हो तो अल्हम्दु शरीफ़ के बाद हर सुरत पढ़ सकते हो अगर चाहो तो सुरह काफ़िरुन पढ़ो-

सुरह काफ़िरून- कुल या अय्यु हल्काफिरुन. लस आबुदु माताब्दुन. वला अन्तुम आबिदु-न-मा आबुद. वला आना आ बिदुम्मा अ-बत्तुम. वला अन्तुम आबिदु न मा आबुदु. लकुम दीनुकुम व लियदीन.

तर्जुमा- आप फर्मा दीजिए ए काफिरो ! मैं नहीं पूजता हूं जिसे तुम पुजते हो और न तुम उसे पुजने वाले हो जिसे मैं पुजता हुं और न मैं पूजने वाला हुं जिसे तुम ने पुजा और न तुम उसे पूजने वाले हो जिसे मैं पूजता हुं तुम्हारे लिए तुम्हारा दीन है और मेरे लिए मेरा दीन है।

सूरत पढ़ कर अल्लाह अकबर कहते हुए रुकू में जावे, दोनों हाथ की उंगलीयां खोल कर उन से दोनो घुटनों को पकड़ लो पीठ को बिल्कुल सीधी रखो, हाथ पस्लियों से अलैहदा रहे और पिंडलीया सीधी रहे, रुकू में तीन बार या पांच बार या सात बार रुकू की तस्बीह पढ़े।

रुकू की तस्बीह- सुब्हा-न- रब्बियल अज़ीम (पाक है मेरा रब अज़मत वाला) इस के बाद तस्मिअ पढ़ते हुए सीधे खड़े हो जाव।

तस्मिअ- समि अल्लाहु लि मन हमिदाह(अल्लाह ने उस की सुन ली जिस ने उस की तारीफ़ की) और तस्मीअ के बाद तहमीद पढ़ो ।

कोमा की तहमीद- रब्ब-ना- ल- कलहम्दु(ऐ हमारे रब सब तारीफ़ तेरे ही लिए है)

नोट- इमाम सिर्फ तस्मीअ पढ़े और मुकतदी(इमाम के पीछे केनमाज़ी) सिर्फ तहमीद पढ़े। और अकेला नमाज़ पढ़ने वाला

तस्मीअ और तहमीद दोनों पढ़े फिर अल्लाहु अकबर कहते हुए सज्दे में जावे पहले ज़मीन पर दोनों घुटने फिर दोनों हाथ फिर नाक फिर पेशानी रखो, चेहरा दोनों हथेलीयों के बीच और अंगुठा कान के मुकाबिल (बराबर) रहे हाथ की उंगलीयां मिली रखो ताकि सब के सर किब्ले की तरफ रहें, कुहनिया पस्लियों से और पैर रानों से अलैदहा रहे, कुहनिया ज़मीन पर मत बिछाव सज्दे में तीन पांच या सात इस तरह सज्दे की तस्बीह पढो-

सज्दे की तस्बीह- सुब्हा-न-रब्बियल आला (पाक है मेरा पर्वर दिगार बहुत बरतर) इसके बाद तकबीर यानी अल्लाहु अकबर कहते हुए इस तरह उठो कि पहले पेशानी फिर नाक, फिर दोनों हाथ उठायें, सज्दे से उठ कर सीधे बैंठ जावे, फिर तकबीर कहते हुए दुसरा सज्दा करो और इस में भी सज्दे की तस्बीह तीन, पाच या सात बार पढ़ो फिर तकबीर कहते हुए उठो और पंजों के बल पर हाथ को ज़मीन पर रखे बगैर सीधे खड़े हो जावे और खड़े हो कर हाथ बांध लो, और बिस्मिल्लाह और सुरह फातिहा और कोई सुरह पढ़ो अगर चाहो तो सुरह अख्लास पढ़ो और अगरइमाम के पीछे हो तो कुछ न पढ़ो, खामोश खड़े रहो।

सुरह अख्लास- कुल हु वल्लाहु अहद. अल्ला हुस्समद. लम यलिद व लम यूलद.

वलम य कुल्लहु कुफु वन अहद.

तर्जुमा- कह दो (ऐ मुहम्मद) वह (अल्लाह) एक है, अल्लाह बे-नियाज़ है नहीं जना उसने और न वह जना गया और नहीं है उसके बराबर कोई।

फिर इसी कायदे से रुकअ, कौमा, और दोनो सज्दे करो, दूसरे सज्दे से सर उठा कर बायां पाव बिछा कर इस पर बैठ जवो, दायां पावं खड़ा रखो और पावं की उंगलियों के सर किब्ले की तरफ मोड दो, और दोनों हाथ रानों पर रखो इस तरह कि उंगलियाँ सीधी रहें और तशहहुद यानी अत्तहियात पढो-

तशद-हद यानी अत्तहीयात

अत्तहीयातु लिल्लाहि वस्सलवातु वत्तय्यिबातु अस्सलामु अलै-क अय्युहन- नबीयु व रहमतुल्लाहि व ब-र-का- तुह. अस्सलामु अलैना व अला इबादिल्लाहिस- सालिहीन. अशदहु अल-ला इला-ह इल्लल्लाहु व अशहदु अन्न मुहम्मदन अब्दुहु व रसूलूह.

तर्जमा- सब ज़बानी इबादतें सब बदनी इबादतें और सब माली इबादतें सिर्फ अल्लाह के लिए हैं। ऐ नबी! आप पर सलामती हो और अल्लाह की रहमत और उस की बरकतें हों हम पर और अल्लाह के सारे बंदे पर भी सलामती हो। मैं गवाही देता हूं कि इबादत और बन्दगी के लायक सिर्फ अल्लाह है। मैं इस बात की गवाही देता हुं कि(हज़रत) मुहम्मद स. अल्लाह के बन्दे और रसूल हैं।

जब अश हदु अल्ला इला-ह पर पहुंचो तो सीधे हाथ अंगुठे और बीच की उंगली से मुट्ठी का हलका बांध लो और छुंगलियाँ और उसके पास वाली उंगली को बन्द कर लो फिर कलमे की उंगली को उठा कर इशारा करो आखिर तक मुट्ठी का हलाका बांधे रहो, तशह. हुद खतम करके अगर दो रकातवाली नमाज़ है तो दरुद शरीफ पढ़ो और उसके बाद दुआयें मासुरा पढ़ो।

दरुद शरीफ़

अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदिव व अला आलि मुहम्मदिन कमा सल्लैत अला इब्राही-म व-अलाअ आले इब्राही-मइन्न-क हमीदुम्म्जीद. अल्लाहुम्म बारीक अला मुहम्मदिव व अला आलि मुहम्मदिन कमा बारकता अला इब्राहीम व अला आले इब्राही-म इन्न- क हमीदुम्मजीद.

तर्जुमा- ऐ अल्लाह ! हज़रत मुहम्मद स. और हज़रत मुहम्मद स. की आल पर रहमत भेज, जिस तरह तुने इब्रहीम अलै. और उन की आल पर रहमत भेजी तू तारीफ वाला और बुजूर्गी वाला है। ऐ अल्लाह ! हज़रत मुहम्मद स. और आपकी

आल को बरकत दे जिस तरह तुने हज़रत इब्राहीम अलै. और उन की आल को बरकत दी। बेशक तू तारीफ वाला और बुजूर्गी वाला है।

दुआये मासुरा

अल्लाहुम्म इन्नी ज़लमतु नफसी जुलमन कसीरौ वला यगफिरुज़ जुनू-ब इल्ला अन-त फग- फिरली मग फि-र-तम मिन इनदि- क वर हमनी इन्न-क अन- तल गफ़ुरुर रहीम.

तर्जुमा- ऐ अल्लाह मैं ने अपने नफ्स पर बहुत जुल्म किया है और तेरे सिवा कोई गुनाहे का बखशने वाला नहीं है पस अपनी खास बख्शिश से मुझे बख्श और मुझ पर रहम फरमा बेशक तू बख्शने वाला मेहरबान है।

इस के बाद दाहिनी तरफ सलाम फेरो, फिर बायें तरफ सलाम फेरो।

सलाम के अलफाज़ यह हैं-

अस्सलामु अलैकुम व रह- म- तुल्लाह

तर्जूमा- सलाम हो तुम पर और रहमत अल्लाह की।

अगर इमाम के पीछे नमाज़ पढ़ रहे हो और दुआए मासुरा इस से पहले खतम हो जाये तो इमाम का इन्तज़ार कर के उसके साथ सलाम फेरो।

यह दो रकात वाली नमाज़ खतम हुई और अगर तीन या चार रकात वाली फ़र्ज़ नमाज़ है तो अत्तहियात (अब्दुहु व रसूलहु तक) पढ़ कर फौरन तक्बीर कहते हुए खड़े हो जाओ और सिर्फ बिस्मिल्ला और अल्हमदू पढ़ो, सुरह न मिलावो (और अगर इमाम के पीछे हो तो कुछ न पढ़ो, खामोश खड़े रहो) अपनी नीयत के मुताबिक एक या दो रकात पढ़ कर रुकुअ सज्दे करके बैठ जावो और अत्तहियात, दरूद शरीफ़, और दूआए मासुरा पढ़ कर दोनों तरफ सलाम फेर कर नमाज़ खतम करो।

फर्ज़ नमाज़ के बाद खास तौर से दुआ कबुल होती है

सलाम फेर कर अल्लाह ताला से दीनी व दुनियावी हाजतों और ज़रुरतों के लिए दुआ करें।

फर्ज़ नमाज़ के बाद की दुआ

अल्ला हुम-म अन्तस्सलामु व मिनकस्सलाम तबारक- त या ज़ल- जलालि वल इकराम।

तर्जुमा- ऐ अल्लाह तुही सलामती देने वाला है और तेरी ही तरफ़ से सलामती मिल सकती है, बहुत बरकत वाला है तू ऐ अज़मत (बड़ाई) और बुज़ूर्गी वाले।

फर्ज़ नमाज़ों के बाद

आ- य- तुल- कुर्सी पढ़ने की बड़ी फज़ीलत है इस को भी पढ़ो।

आ-य- तुल कुर्सी

अल्लाहु ला इला-ह इल्ला-हो वल- हय्युल क़य्यूम. ला ता खुज़ुहू सिनतू वला नौम। लहु मा फिस समावाते वमा फिल अर्ज़। मनज़ललज़ी यशफउ इन्दहु इल्ल बि इज़्निही। यअ-लमु मा बैना अयदी हिम वमा खल्फ़हुम वला युहीतूना बिशइम मिन इल्मेही इल्ला बिमा शाअ। वसिअ कुर्सीयु हुस्समावाते वल अर्ज़ वला यऊदुहू हिफ्ज़ुहुमा व हुवल अलीयुल अज़ीम.

तर्जूमा- अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लायक नहीं वह ज़िंदा है संभालने वाला उसको न ऊंघ आती है और न नींद, सब उसी के लिए है जो कुछ आस्मानों में है और जो कुछ ज़मीन में, कौन है जो उसके पास सिफारिश कर सके उसकी इजाज़त के बगैर। वह जानता है उनके तमाम हाज़िर और गायब हालात को और वह मौजुदात उनकी मालूमात में से क़िसी चीज़ को भी

अपने इल्म में नहीं ला सकते मगर जिस कद्र इल्म वह चाहे उसकी कुर्सी ने सब आसमानों और ज़मीन को अपने अन्दर ले रखा और उसको इन दोनों की हिफाज़त कुछ गिरां नहीं मालूम होती और वह बड़ा बुलंद मरतबे वाला है।

आ-य-तुल-कुर्सी के बाद ३३ बार सुब्हा नल्लाह, ३३ बार अल्हम्दु लिल्लाह और ३४ बार अल्लाहु अकबर पढ़ो इसकी भी बड़ी फज़ीलत है।

किराअत का बयान

फर्ज़ की सिफ पहली और दूसरी रकात में अल्हम्दू शरीफ़ के बाद कोई सूरत या इस की जगह चन्द आयातें पढ़ी जाती हैं और तीसरी और चौथी रकात में सिर्फ अल्हम्दू शरीफ पढ़ी जाती है, अभी जो हमने नमाज़ का तरीका बयान किया है कि तीसरी और चौथी रकात में अल्हम्दू के साथ साथ सुरह न मिलाव यह फ़र्ज़ों के मुतालिक है खुब समझो अगर सुन्नत, नफिल या वित्र पढ़नी हो तो हर रकात में अल्हम्दू शरीफ़ के साथ कोई सूरत या चंद आयात मिलाव।

नमाज़ में पढ़ी जाने वाली सूरतें

पहले आप नीचे लिखी हुई सुरतों को खूब अच्छी तरह याद कर डालिए। हर सूरत के साथ उसका तर्जूमा भी दे दिया गया है। नमाज़ में तर्जूमा पढ़ा नहीं जाता लेकिन उसको याद कर लेना इस लिए ज़रुरी है कि आप जो कुछ पढ़ें उसे समझते भी जायें समझ कर नमाज़ पढ़ने में आप को जो लुत्फ व फायदा हासिल होगा वह बगैर समझे पढ़ने में नहीं होगा।

सूरह नास

बिस्मिल्ला हिर्रहमा निर-रहीम.

कुल अऊज़ो बे-रबिन्नास.मलेकिन्नासे इलाहिन्नासे. मिन शररिल वस-वासिल ख़न्नासिल्ल जी- यु- वसवेसो फी सुदूरिन्नासे. मिनल जिन्नते वन्नास.

तर्जुमा-(ऐ रसूल !) कह दो मैं पनाह मांगता हुं लोगों के मालिक की, लोगों के बादशाह की, लोगों के माबूद की उस वसुसा डालने वाले, पीछे हट जाने वाले(शैतान) की बुराई से जो लोगों के दिल में वसुसा डालता है. वह जिन्नों में से हो या आदमियों में से.

सूरह फ़लक

बिस्मिल्ला हिर -रहमा- निर -रहीम.

कुल अऊज़ू बे-रब्बिल- फ-ल-के. मिन शररे माख-ल-क.व मिन शररे ग़ासेकिन इज़ा वकब. व मिन शररि-न नफ्फासाते फिल उकदि. व मिन शररे हासिदिन इज़ा हसद.

तर्जुमा- (ऐ रसूल !) कह दो कि मैं सुबह के पैदा करने वाले की पनाह मांगता हुँ। उस की पैदा की हुई तमाम मखलूक के शर से बचने के लिए।और अंधेरे रात के शर से जब वह सिमट कर छा जाये।और गन्डों पर फुंकने वालियों के शर से।और हसद करने वाले के शर से जब वह हसद करे।

सरह नस्र

बिस्मिल्ला हिर- रहमा-निर- रहीम

इज़ा जा-अ नसरुल्लाहे वल फतहो. व-र-ऐतन्ना स- यदखुलू-न फी दीनिल्लाहि अफवाजा. फसब्बिह बिहम्दि रब्बि-क-वस्तग फिहूँ. ईन्नहु का-न तव्वाबा.

तर्जुमा- ऐ रसूल ! जब खुदा की मदद और फतह आ गई और तुमने देख लिया कि खुदा के दीन में गिरोह दाखिल हो रहे हैं तो अपने परवर- दिगार की तारीफ के साथ उस की पाकी बयान करो और उससे बख्शिश माँगो। बेशक वह बड़ा तौबा कबूल करने वाला है।

सूरह कौसर

बिस्मिल्ला हिर- रहमा-निर- रहीम.

इन्न आअ तैना कल कौसर. फसल्लि लि रब्बि-क वन्हर. इन न शा निअक हुवल अब्तर.

तर्जुमा- ऐ नबी ! हमने तुमको कौसर (जन्नत की एक नहर) अता की है। तो तुम अपने परवर- दिगार के लिए नमाज़ पढ़ते रहो, और कुरबानी करो, बेशक तुम्हारा दुश्मन ही बेनाम व निशान है।

सूरह अस्र

बिस्मिल्ला हिर- रहमा-निर- रहीम.

वल अस्रे: इन्नल इन्सा-ना लफी खुस्रिन. इल्लल्लजी-न- आमनू व अमिलुस सालिहाते व तवासौ बिल हक्के व तावासौ बिस सब्र.

तर्जुमा- कसम है ज़माने की बेशक इन्सान घाटे में है, सिवाए उन लोगों के जो इमान लाए और नेकी के काम किए, और एक दूसरे को सब्र की ताकीद करते रहे।

मस'ला- इमाम के पीछे मुक्तदी (इमाम के पीछे नमाज़ पढ़ने वाले) अल्हम्दु शरीफ और सुरह न पढ़े।

मस'ला- इमाम पर वाजिब है कि फर्ज़ जुमअ, इदैन की

तमाम रकाअतों में और इशा, मगिरब की पहली दो रकाअतों में अल्हम्दु शरीफ़ और सुरह ऊंची आवाज़ से पढ़े और ज़ोहर और असर की तमाम रकआतों में और मग्रिब की तीसरी और इशा की तीसरी और चौथी रकाअत में अल्हम्दु शरीफ आहिस्ता पढ़े।

मस'ला- किसी भी नमाज़ के लिए कोई सुरत शरीअत में इस तरह मुकर्रर नहीं है कि इस सुरत के बगैर नमाज़ ही न हो, इस लिए किसी नमाज़ के लिए खुद किसी सुरत की ऐसी पाबन्दी कर लेना कि इसके सिवा कभी कोई सुरत न पढ़े यह मकरुह है।

मर्दो और औरतों की नमाज़ में फर्क़

औरतें भी उसी तरह नमाज़ पढ़े जैसे नमाज़ पढ़ने का तरीका बयान किया गया है लेकिन चन्द चीज़ो में मर्द और औरत की नमाज़ में फ़र्क़ है वह नीचे लिखी जाती है।

(१) तक्बीर तहरीमा के वक्त मर्दों को चादर बगैरा से हाथ निकाल कर कानों तक उठाना चाहिए और औरतो को हर हाल में बगैर हाथ निकाले हुए कन्धो तक उठाना चाहिए।

(२) तक्बीर तहरीमा के बाद मर्दों को नाफ़ के नीचे हाथ बांधना चाहिए और औरतों को सीने पर।

(३) मर्दों को दायें हाथ की हथीली बायें हाथ की हथीली की पुश्त पर रहे और अंगुठे और छुगंली से हलका के तौर पर पहुंचे को पकड़ लो और बाकी तीन उंगलियाँ कलाइ पर रहें।

(४) मर्दों को रुकुअ में अच्छी तरह झुकना चाहिए कि सर और पुश्त बराबर हो जाये और औरतों को सिर्फ़ इस क़दर झुकना चाहिए कि जिससे उनके हाथ गुटनों तक पहुँच जायें।

(५) मर्दों को रुकुअ में उंगलियों कुशादा करके घुटनों

पर रखनी चाहिए और औरतों को बगैर कुशादा किये हुए मिला कर रखना चाहिए।

(६) मर्दों को रुकुअ की हालत में कुहनियाँ पहलु से अलैहदा रखना चाहिए और औरतो को पहलु से मिला कर रखना चाहिए।

(७) मर्दों को सज्दे में पेट रानों से और बाज़ु बगल से जुदा रखना चाहिए और औरतो को मिला कर।

(८) सज्दे में मर्दों की कुहनियों ज़मीन से उठी हों और औरतों की ज़मीन पर बिछी हों।

(६) मर्दों को सज्दे मैं दोनों पैर उंगलियों के बल खड़े रखना चाहिए और औरतों को दोनों पांव बाहर की तरफ निकालने होगें।

(१०) मर्दों को बैठने की हालत में बायें पांव पर बैठना चाहिए और दाहिने पांव की उंगलियों के बल खड़ा रखना चाहिए और औरतो को दोनो पांव दाहिने तरफ निकाल कर बायें पर बैठना चाहिए।

(११) औरतो को किसी वक्त भी ऊंची आवाज़ में किराअत करने का इख्त्यार नहीं है बल्कि उन को हर वक्त आहिस्ता आवाज़ से किराअत करना चाहिए।

वित्र की नमाज़

वित्र की नमाज़ तीन रकाअत है, पढ़ने का तरीका यह है कि दो रकाअते पढ़ कर काअदा में बैठे और अब्दहु व रसुलहु तक पढ़ कर खड़ा हो जाए और तीसरी रकाअत में अल्हम्दू और सुरत से फारिग हो कर अल्लाहु अकबर कहते हुए कानों तक हाथ उठाये और फिर हाथ बांध कर दुआऐ कुनूत पढ़े इसके बाद रुकुअ में जांये और बाकी नमाज़ मामुल के मुताबिक पूरी करे।

दुआए कुनूत

अल्ला हुम्म इन्ना नस्तईनु-क-व नस्तगफिरूका-व नूमिनो बि-क- व न त वक्कलो अलैक व नुसनी अलै-कल-खै-र-व नश्कुरूका वला नक्फुरू-क-व-नख़लओ-व नतरूकु मैयफ़-जुरू-क-अल्लाहुम्म ईय्या-क-नअ बुदु व ल-क नुसल्लीव नस्जुदु व इलै- क नसआ व नह-फ़िदु व नरजु रह-म-त-क व नहशा अज़ा-ब-क-इन्न अज़ा-ब-क बिल्कुफ्फारे-मुलहिक़.

तर्जुमा- इलाही हम मदद चाहते हैं तुझसे और माफी मांगते हैं तुझसे और इमान लाते हैं तुझ पर और तारीफ़ करते हैं तेरी अच्छी और शुक्र करते हैं हम तेरा और ना शुक्री नहीं करते हम तेरी और उससे अलग और अलैहदा होते हैं जो नाफरमानी करते हैं तेरी, इलाही तेरे लिए ही इबादत है और तेरे ही लिए हमारी नमाज़ और तेरी तरफ हमारी दौड़ है और हम तेरी खिदमत में हाज़िर हैं और उम्मीदवार हैं तेरी रहमत के और डरते हैं अज़ाब से तेरे बेशक तेरा अज़ाब काफिरों को मिलने वाला है।

अगर किसी को दुआए कुनूत याद न हो तो वह बजाए इसके यह पढ़े 'रब्बना आतिना फिद दुन्या ह-स-न तौ व फिल आखि-रते ह-स-न तौ व-क़िना अज़ाबन्नार, लेकिन हमेशा इसी को पढ़ना ठीक नहीं बल्कि दुआए कुनूत जल्द याद कर लेवे।

वित्र की नमाज़ का सलाम फेर कर तीन बार सुब्हानल मलि-किल कुद्दुस पढ़ो।

जुमअ की नमाज़ का बयान

जुमअ की नमाज़ फर्ज़ है जुमअ के दिन ज़ुहर की नमाज़ नहीं है।बल्के इस के कायम मुकाम जुमअ की नमाज कर दी गई

है।इस में दो रकआतें हैं।जिन जुमअ की नमाज़ फर्ज़ हैं। (१) मुसाफ़िर न होना (२) तन्दुरुस्त होना (३) गुलाम न होना (४) शहर या कस्बे का होना (५) मर्द होना (६) आक़िल व बालिग़ होना (७) जमात यानी इमाम के अलावा कम से कम तीन आदमी जमात में हों।

पहली अज़ान से खरीद व फरोख्त (लेन-देन) और कारोबार छोड़ कर मस्जिद में आना वाजिब है जब इमाम खुतबे के लिए चले तो सब लोग बिलकुल ख़मोश होकर खुतबा सुनें खुतबा के वक्त बात करना,नमाज़ पढ़ना, दरुद शरीफ पढ़ना या तस्बीह या और कुछ पढ़ना, किसी को डाटना नसिहत करना जाईज़ नहीं।

हदीस की कितताब 'मिश्कात शरीफ'में है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैकि व सल्लम ने इरशाद फरमाया कि जिस शख्स ने जान बूझ कर जुमअ की नमाज़ छोढ़ दी वह फ़ासिक और सख्त अज़ाब का मुस्तहक है।

जुमअ की चौदा (१४) रकाअतें है जिन की तफसील यह है चार सुन्नतें, फिर दो फर्ज़, फिर चार सुन्नतें फिर दो सुन्नतें और फिर दो नफिल।

चार सुन्नतों की नीयत- नीयत करता हूं मैं चार रकाअत नमाज़ सुन्नत वास्ते अल्लाह तआला के वक़्त कब्ल जुमअ मुंह मेरा काअबा शरीफ की तरफ़ अल्लाहु अक्बर।

दो फर्ज़ों की नीयत - नीयत करता हूं दो रकाअत फर्ज़ नमाज़ की वासते अल्लाह तआला के वक़्त जुमअ का मुंह मेरा काअबा शरीफ की तरफ पीछे इस इमाम के अल्लाहु अक्बरं

चार सुन्नतों की नीयत- नीयत करता हूं मैं चार रकाअत

नमाज़ सुन्नत की वासते अल्लाह तआला के मुंह मेरा काअबा शरीफ की तरफ वक्त बाद जुमअ का अल्लाहु अक्बर, दो सुन्नत की नीयत भी इसी तरह है बस फर्क इतना है कि चार रकाअत की जगह दो रकाअत कह लेवे।

दो नफिलों की नीयत- नीयत करता हूं मैं दो रकाअत नफिल नमाज़ बाद जुमअ की वासते अल्लाह तआला मुंह मेरा क़ाअबा शरीफ की तरफ अल्लाहु अक्बर।

मस'ला- जुमअ की नमाज़ में जमाअत शर्त है बगैर जमात के तन्हा नमाज़ पढ़ने से जुमअ की नमाज़ न होगी इसलिए अगर जुमअ की नमाज़ न मिले तो इस की जगह ज़ोहर की नमाज़ पढ़े। इसी तरह अगर बहुत दिनों नमाज़ें न पढ़ी हों और फिर तौबा कर के उन को अदा करना शुरू करे तो जुमअ के दो फर्ज़ों की जगह भी ज़ोहर की कज़ा पढ़े यानी चार रकाअत ज़ोहर पढ़े।

जमाअत का बयान

फर्ज़ नमाज़ जहां तक मुम्किन हो पूरी कोशिश के साथ जमात के साथ अदा करो। बाज़ आलिमों ने जमात के साथ नमाज़ पढ़ने को वाजिब कहा है। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कभी जमात तर्क नहीं फर्मायी यानी जमात कभी नहीं छोड़ी यहां तक कि बीमारी की हालत में भी जब कि खुद नहीं चल सकते थे, दो आदमीयों के सहारे मस्जिद में तशरीफ ले जाकर जमात के साथ नमाज़ अदा फर्माई, कुर्आन शरीफ में इर्शाद है 'वर कऊमा अर्रा कयीन' यानी नमाज़ पढ़ने वालों के साथ नमाज़ पढ़ो, इस आयत शरीफा से जमात के साथ नमाज़ पढ़ने का हुक्म मालूम हुआ।

हदीस शरीफा में है कि बाजमात नमाज़ पढ़ने से एक नमाज़ का सवाब तन्हा नमाज़ पढ़ने से २७ दर्जे ज़्यादा मिलता है और यह भी हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़र्माया कि तन्हा नमाज़ पढ़ने से दो आदमीयों के साथ बाजमाअत पढ़ना बहतर है और जिस कदर भी जमात ज़्यादा हो अल्लाह को महबूब है।

(मिश्कात)

हज़रत अबुहुरेरा रज़ि. से रिवायत है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फर्माया, बेशक मेरे दिल में यह इरादा हुआ कि किसी को हुकम दूं, और किसी शख़्स से कहूं कि वह इबादत करे और मैं उन लोगों के घरों पर जाऊं जो जमात में नहीं आते फिर उन के घरों को आग लगा दूं।

मस'ला- अगर मुक्तदी एक हो और वह मर्द हो या नाबालिग हो तो उस को इमाम के दाहिनी तरफ खड़ा होना चाहिए।

मस'ला - अगर मकतदी एक से ज़्यादा हो तो इमाम के पीछे सफ बांध कर खड़े हों।

मस'ला- पहली सफ में जगह होते हुए दूसरी सफ में खड़ा होना मकरूह है जब पहली सफ पूरी हो जावे तब दूसरी सफ में खड़ा होना चाहिए।

मस'ला - फर्ज़ करो कि ज़ोहर की नमाज़ में तीन रकात हो जाने के बाद कोई आदमी जमात में शरीक हुआ इस को चाहिए कि इमाम के सलाम फेरने के बाद खड़ा हो जाए और गई हुई तीन रकातें इस तरतीब से अदा करे कि पहली रकात में सुरह फातिहा और कोई दूसरी सुरह पढ़ कर रुकुअ व सिज्दा करे क़ादा करे फिर दूसरी रकात में भी सुरह फातिहा के साथ कोई सुरत मिलाये और उस के अन्दर कादा न करे। फिर

तीसरी रकात में सुरह फातिहा के साथ कोई सुरत न मिलाए और रुकूअ सज्दा करके कादा करे और सलाम फेरे।

मस्जिद में दाख़िल होने की दुआ

जब मस्जिद में दाखिल होने लगे तो दरूद शरीफ पढ़ कर यह दुआ पढ़े-

अल्लाहुम्मवफ तह ली अब्बा-ब रह-म-ति-क (ऐ अल्लाह मेरे लिए अपनी रहमत के दरवाजे ख़ोल दे)

मस्जिद से निकलने की दुआ

जब मस्जिद से बाहर निकलने लगो तो दुरुद शरीफ पढ़ कर यह दुआ पढ़ो।

अल्ला हुम्म इन्नी अस अलू-क-मिन फज़लि-क (ऐ अल्ला मैं बेशक तुझसे तेरे फज़ल का सवाल करता हूं।)

इमामत का बयान

इमामत का सबसे ज़्यादा हकदार वह शख़्स है जो हाज़िर नमाज़ियों मे सबसे ज़्यादा मसले जानता हो बशर्ते कि कुर्आन शरीफ ऐसा गलत न पढ़ता हो, जिस से नमाज़ न हो इस के बाद सबसे ज़्यादा हकदार वह है जो कुर्आन शरीफ, सबसे ज़्यादा ठीक पढ़ता हो, इसके बाद वह जो सबसे ज़्यादा गुनाहों से परहेज़ करने वाला हो, इस के बाद वह जिस को उमर सब से ज़्यादा हो इस के बाद वह जिस के अख़्लाक सब से नेक हो इस के बाद वह जो ज़्यादा खुबसुरत हो।

मस'ला- जो शख़्स नफिल या सुन्नत पढ़ रहा हो उस के पीछे फर्ज़ पढ़ने वाले की नमाज़ न होगी, और नफिल नमाज़

फर्ज़ पढ़ने वाले के पीछे हो जायेगी।

मरीज़ की नमाज़

नमाज़ इस्लाम का बहुत बड़ा फरीज़ा है और दीने इस्लाम में इस का बहुत बड़ा मरतबा है। सफर हो, मरज़ हो (बीमारी हो), रंज(दुख) हो, खुशी हो, तकलीफ़ हो या आराम, बहरहाल नमाज़ पढ़ना फर्ज़ है। हज़ार आफ़त मुसीबत और मुश्किलात का सामना हो तो इस हालत में भी नमाज़ माफ नहीं है। बहुत से लोग जो मरज़ और तक्लीफ़ की वजह से नमाज़ छोड़ देते हैं वे बहुत बड़ा गुनाह कर देते हैं और अपनी आख़िरत खराब करते हैं।

मस'ला- नमाज़ किसी हालत में न छोड़े जब तक खड़े होकर पढ़ने की ताकत रहे खड़े होकर पढ़े और खड़ा न हुआ जाय तो बैठ कर नमाज़ पढ़े, बैठे-बैठे रुकुअ करे और सिज्दा करे।

मस'ला- अगर रुकुअ सज्दा करने की ताकत न हो तो रुकुअ और सज्दा इशारे से करे और सज्दे के लिये रुकुअ से ज़्यादा झुके।

मस'ला- अगर खड़े होने की कुव्वत तो है लेकिन खड़े होने से तक्लिफ होती है या बीमारी बढ़ जाने का डर है तब भी बैठ कर नमाज़ पढ़ना दुरुस्त है।

मस'ला- अगर खड़ा हो तो सकता है लेकिन रुकुअ सज्दा नहीं कर सकता तो चाहे तो खड़े होकर पढ़े और रुकुअ सज्दा इशारे से अदा करे और चाहे तो बैठ कर नमाज़ अदा करे और रुकुअ सज्दा इशारे से करे। दोनों तरह जैसा चाहे पढ़े लेकिन

बैठ कर नमाज़ पढ़ना बहतर है।

मस'ला- अगर बीमार का बिस्तर नजस है यानी गन्दा है उसमें नापाकी लगी है लेकिन उस को बदलने में बहुत तक्लीफ होगी तो उसी पर नामज़ पढ़ लेना दुरुस्त है।

मस'ला- हकीम डाक्टर ने किसी की आंख बनाई और हिलने जुलने से मना किया तो लेटे-लेटे इशारे से नमाज़ पढ़ना चाहिए।

मस'ला- किसी की ऐसी नकसीर फूटी कि बंद ही नहीं होती या कोई ऐसा ज़खम है कि बराबर बहता रहता है किसी वक़्त बहना बंद नहीं होता या पेशाब की बीमारी है कि हर वक़्त क़तरे आते हैं और इतना वक्त नहीं मिलता कि तहारत से नमाज़ पढ़ सके यानी पाक साफ होकर नमाज़ अदा कर सके तो ऐसे आदमी को माजूर कहते हैं इसका यह हुकम है कि नमाज़ के वक़्त वुजू कर लिया करे। जब तक वह वक्त रहेगा तब तक उस का वुजू बाकी रहेगा अलबत्ता जिस बीमारी में मुबतला है उसके सिवा अगर कोई और बात ऐसी पाई जाय जिस से वुजू टूटता है तो वुजू जाता रहेगा और फिर से करना पड़ेगा इस की मिसाल ऐसी है कि किसी के ज़ख़म हुआ है और उस में से खुन आना बंद ही नहीं होता तो उसने ज़ोहर के वक़्त वुजू कर लिया तो जब तक ज़ोहर का वक़्त बाकी रहेगा इस तरह वुजू नहीं टूटेगा हां अगर पेशाब-पाखाना किया या सुई चूब गई, इससे खून निकल पड़ा तो वुजू जाता रहा, फिर दोबारा वुजू करे।

बयान नमाज़ तरावीह का

तरावीह की नमाज़ की नियत

नवयतो अन उसल्लिय लिल्लाहे तआला रक अ त सलातीत्तरावीह सुन्नते रसुलिल्लाहे तआला इक़तदयतो बे-हाज़ल इमामे मुतबज जेहन इला जेहतिल कअबतिश शरीफ़ते अल्लाहो अक्बर।

☐ तरावीह में दो रकअत की नियत करे, तो ऊपर जो नियत लिखी हुई है वही पढ़ें।लेकिन जब चार रकाअत की नियत करे तो रकअय लिखा है वहां अर-ब-अ रकआते पढ़े और अगर अकेला नमाज़ पढ़े तो इकतदय तो बे हाजल इमाम इबारत छोड़ दे, और इमाम के साथ पढ़ता हो, तो इस को न छोड़े।

तरावीह की नमाज़ की नियत हिंदी में-नियत करता हूं मैं दो रकात नमाज़ सुन्नत तरावीह की वास्ते अल्लाह तआला के मुंह मेरा किबले की तरफ पीछे इस इमाम के अल्लाहु अक्बर।

जिस रोज़ रमज़ान का चांद देखे उसी रात को तरावीह शुरू करे। शव्वाल महीने का चांद देख कर उसी रात को मौकूफ करें तरावीह की बीस रकअतें हैं। उस के पढ़ने की तरतीब इस तरह है। पहले इशा की चार रकअत सुन्नत, चार रकअत फ़र्ज़ पढ़े, बाद में दो रकअत सुन्नत, दो रकअत नफ़्ल पढ़े, इसी तरह इशा की बारह रकअतें पढ़ के तरावीह के वास्ते सब मिल के सलात कहें वह यह है-

'अस्सलातो सुन्नतुल तरावीह' और तरावीह की नमाज़ की

नीय्यत दो दो रकअत करके पढ़े।

तरावीह की दुआ

'पहले तरावीह की दो रकाअत पढ़े फिर दो रकाअत पढ़े, बाद में यह दुआ पढ़े।'

सुब्हा नल मलिकिल कुददुसे सुब्हा-न-ज़िल मुल्के वल म-लकूत सुब्हा-नल ज़िल इज़्ज़ते वल हयबते वल कुदरते वल किबरियाए वल जबरुते सुबहानल मलिकिल हैय्यील लज़ी ला यनामो वला यमूतो सुब्बूहुन कुदरूसुन रब्बोना व रब्बुल मलाअेकते वर रुह अल्ला हुम्मा अ जिर ना मिनन्नारे या मुजीरु या मुजीरु या मुजीरु।

ऊपर लिखी हुई दुआ तरावीह की हर चार रकाअत के बाद बैठ कर पढ़ना मुस्तहिब है।

मस'ला - रमज़ान के महीने में मर्दो और औरतों के लिए बीस रकअत नमाज़ तरावीह बाद नमाज़ इशा अदा करना सुन्नते मौक्किदा है। इर्शाद फर्माया नबी करीम स. ने कि जिसने रमज़ान(की रातों) में कयाम किया उस के पिछले गुनाह माफ कर दिये गये। *(मिश्कात)*

मस'ला - नाबालिग के पीछे नमाज़ तरावीह पढ़ना दुरुस्त नहीं है।

मस'ला - नमाज़ तरावीह अगर जान कर छोड़ी या सफर में छूट गई तो जिस रात की तरावीह छुटी है उसके गुज़र जाने के बाद कज़ा नमाज़ लाज़िम नहीं है अलबत्ता कसदन यानी जानबूझ कर छोड़ना गुनाह है।

मस'ला - अगर किसी को इशा के फर्ज़ जमात से न मिली हों तो फर्ज़ तन्हा (अकेला) पढ़ कर तरावीह और वित्र बाजमात अदा करना दुरुस्त है।

तहज्जुद की नमाज़

तहज्जुद के न पढ़ने का गुनाह नहीं है। लेकिन पढ़ने का बड़ा सवाब है। इशा की नमाज़ के बाद सो कर फिर उठ कर यह नमाज़ पढ़ी जाती हैं दो रकअत से लेकर आठ रकअत तक जितनी जी चाहे पढ़े। पौ फटने के पहले तक इस का वक़्त है। दो रकअत से ज़्यादा पढ़नी हो तो दो दो रकअत कर के पढ़ना चाहिए, जो आयतें, सुरतें याद हों पढ़ लेना चाहिए उस के लिए कोई सुरत या आयत मख्सुस नहीं है।

मुसाफिर की नमाज़

जो शख्स मर्द या औरत ४८ मील का सफर करे वह मुसाफिर है। उसे अपनी बस्ति से निकलने के बाद हर चार रकअत वाले फर्ज़ों की जगह दो रकअत अदा करनी होगी और सुन्नतों का यह हुक्म है कि अगर जल्दी हो तो फज की सुन्नतों के अलावा और सुन्नतें छोड़ देना दुरुस्त है इन के छोड़ने से कुछ गुनाह न होगा और अगर जल्दी न हो, न अपने साथियों से रह जाने का डर हो तो न छोड़े और सुन्नतें सफर में पूरी पढ़े इन में कमी नहीं है फ़ज-वित्र और मग़्रिब की नमाज़ में भी कोई कमी नहीं है।

क़ज़ा नमाज़

पांचों वक़्त की फर्ज़ नमाज़ों में से जो नमाज़ किसी वजह से वक़्त पर अदा न हो सके इस को दूसरे वक़्त में पढ़ ले इस को क़ज़ा पढ़ना कहते हैं क़ज़ा सिर्फ़ फर्ज़ और वित्र नमाज़ की पढ़ी जाती है। अलबत्ता फर्ज़ की क़ज़ा उसी रोज़ सूरज ढलने से पहले पढ़े तो सुन्नत की क़ज़ा भी पढ़ ले।

ईदैन की नमाज़ का बयान

ईदैन की नमाज़ साल में दो दफा आती है इस लिए इस की तरकीब आम लोगों को याद नहीं रहती, ईदुल-फित्र और इदुल-जुहा की दो रेकअत वाजिब है।

ईदैन के मुस्तहिबात

(१) गुस्ल करना और मिस्वाक करना।

(२) अपने पास जो कपड़े मौजूद हों उन में जो अच्छे से अच्छे कपड़े हों वह पहनना।

(३) खुशबू लगाना।

(४) ईदगाह में जो आबादी से बाहर हो ईद की नमाज़ कहां पढ़ना चाहिए।

(५) ईदगाह पैदल जाना।

(६) एक रास्ते से जाना और दुसरे रास्ते से वापस आना।

(७) ईद की नमाज़ से पहले घर में या ईदगाह में नफिल नमाज़ न पढ़ना और ईद की नमाज़ के बाद ईदगाह में नफिल नमाज़ न पढ़ना घर आकर पढ़े तो कुछ हरज नहीं।

(८) नमाज़ ईदुल फित्र से पहले खजुर या कोई मीठी चीज़ खाना।

(९) सदका फित्र वाजिब है तो इस को नमाज़ से पहले अदा करना।

(१०) ईदुल अ-ज़हा के दिन नमाज़ ईद के बाद अपनी कुर्बानी का गोश्त खाना चाहिए।

ईदुल फित्र की नमाज़ को जाते हुए रास्ते में आहिस्ता आहिस्ता तकबीर कहे और ईदुल अ-ज़हा में ज़रा ऊंची आवाज़ से कहते हुए जाना मुस्तहिब है।

ईदुल अज़हा के ख़ास अहकाम

अगर मालदार और साहबे निसाब है तो उस को ईदुल अज़हा की नमाज़ के बाद कुर्बानी करना वाजिब है और ज़िल्हिज्जाल की नौ (९) तारीख की फज्र की नमाज़ से तेरहवीं (१३) तारीख की असर तक हर फर्ज़ नमाज़ के बाद जो जमात के साथ पढ़ी गई हो एक बार तक्बीरे तश्रीक ब अवाज़े बुलन्द कहना इमाम व मुक्तदी पर कहना वाजिब है तक्बीरें तश्रीक यह है-

अल्लाह अकबर, अल्लाहु अक्बर ला इला ह इल्लल लाहु वल्लाहु अक्बर व लिल्ला हिल्हम्द।

ईद की नमाज़

ईद के दिन हर मुसलमान को चाहिए कि गुस्ल करे और अच्छा लिबास मुवाफ़िक मकदूर के पहने, खुश्बू लगावे और कुछ मीठी चीज़ खावे जब नमाज़ पढ़ने ईदगाह जावे तो रास्ते

में ये तकबीरें आहिस्ता-आहिस्ता पढ़ता जावे।

अल्लाहो अकबर अल्लाहो अकबर ला इला-ह इल्लाहो वल्लाहो अकबर अल्लाहो अक्बर व लिल्ला हिल हम्द।

सब मुसलमान आबादी से बाहर ईदगाह, या मैदान में जमा होकर दो रेकअत नमाज़ जमाअत से पढ़े और जुमे का इमाम नमाज़ पढ़ाये।

नियत नमाज़ ईदेन का इस तरह करें

नियत की मैने दो रेकअत नमाज़ ईदुलफित्र वाजिब मअ छे तकबीरों के मुँह मेरा तरफ़ कअबे शरीफ के वास्ते अल्लाह तआला के पीछे इमाम के, फिर(अल्लाहो अकबर) कह कर नियत बाध ले और पढ़े ''सुब्हा न क अल्ला हुम्मा व बेहम्दे का व तबारकस्मोका व तआला जद्दुका व ला- इलाहा ग़ैरोका'' पढ़ कर दोनों हाथ कानों तक ले जाकर अल्लाहो अक्बर कह कर हाथ छोड़ दे तीन बार ऐसा करें, लेकिन तीसरी बार हाथ बांध ले और 'अलहम्दो' व सूरत पढ़ कर और रुकुअ सिज्दा करे और दूसरी रेकअत में अलहमद और सुरत पढ़ लेने के बाद तीन बार तकबीर कहे और कानों तक हाथ ले जावे लेकिन चौथी बार सिर्फ़ (अल्लाहो अकबर) कह कर रुकअ करे और दूसरी रेकअत पूरी करके नमाज़ खतम करे, इस के बाद इमाम खुतबा सुनावे और दुआ माँग कर ईद मिले। ईदगाह को एक रास्ते से जाकर दूसरे रास्ते से वापस आवे।

बक़रईद की नमाज़

इस नमाज़ में भी ईदुलफित्र की तरह कायदे हैं सिर्फ़ इतना फ़र्क है कि ईदुलफित्र में नियत के साथ लफ्ज़ ईदुलफित्र

कहा जात है। और बक़रईद की नमाज़ में ईदुलजुहा कहा जाता है। ईदुलअजहा के दिन नमाज़ ईद के बाद अपनी कुर्बानी का गोश्त खाना चाहिए।

ज़कात का बयान

इसलाम का तीसरा रुकन ज़कात है जिसके पास साढ़े बावन तोले चाँदी या साढ़े सात तोले सोना या इस से ज्यादा हो- तिजारती माल या जेवर सोना चाँदी का, उस पर फर्ज़ है कि इस माल पे पुरा एक साल गुज़रने पर चालीसवाँ हिस्सा यानी सौ रुपय पर ढाई रुपये अल्लाह की राह में गरीबों और मोहताजों को खैरात करे और दिल में ये नीयत करे कि ज़कात दे रहा हुँ।

ज़कात किस पर फ़र्ज़ है?

ज़कात फर्ज़ होने के लिए बहुत बड़ा मालदार होना ज़रुरी नहीं है। जिस मर्द या औरत के पास साढ़े बावन तोले चाँदी या साढ़े सात तोले सोना या इन में से किसी एक कीमत के रुपय का सौदागरी के माल का मालिक हो, वह शरीअत में मालदार है और उस पर ज़कात फर्ज़ है।

मस'ला- ज़कात की रक़म से मस्जिद बनाना, लावारिस मुर्दे के कफन दफन में लगाना दुरुस्त नहीं।

मस'ला- भाई, बहन, भतीजी, भांजी, चचा, चची, फूफी, ख़ाला और मामू इन लोगों को ज़कात देना दुरुस्त है लेकिन शर्त यह है कि हक़दार हो बल्कि उन को ज़कात देने से दोहरा सवाब मिलता है।

सदकए फित्र का बयान

जो शख्स मालिक निसाब हों, तो ईद के दिन सदका फित्र का देना उस पर वाजिब है, या उस पर जकात तो वाजिब नहीं लेकिन जरुरी अस्बाब से ज्यादा इतनी कीमत का माल-व-अस्बाब है। जितनी कीमत पर जकात वाजिब होती है तो इस पर ईद के दिन सदका देना वाजिब है।सदका-ए-फित्र में गैहुँ पौने दो सेर और जौ इसका दुगुना देना चाहिए।

मसला-: बीवी की तरफ से और बालिग औलाद की तरफ से सदका-ए-फित्र अदा करना वाजिब नहीं। अगर किसी ने ईद के दिन सदका-ए-फित्र न दिया तो माअफ नहीं हुआ।अब किसी दिन दे देना चाहिए।

रमज़ान शरीफ के रोज़े का बयान

इस्लाम का चौथा रुकन रोज़ा है। इबादत की नियत के साथ सुब्ह सादिक से मग़रिब के वक्त तक खाने, पीने, औरत से सोहबत वगैरह से बाज़ रखना रोज़ा कहलाता है।

साल भर में एक महीना यानी रमज़ानुल मुबारक के रोज़े फर्ज़ है, हर मुसलमान बालिग मर्द और औरत पर इस की अदायगी ज़रुरी है।

रोज़े में किसी चीज़ का चबाना, चखना, गीबत करना, झूठ बोलना, लड़ना वगैरा हराम है और सख्त गुनाह है।

रोज़ा रखने की नीयत

अल्ला हुम्मा असुमु गदल-ल-क, फग फिर्ली मा कद्दमतु व मा अख्खरतो।

रोज़ा खोलने की नीयत

अल्ला हुम-म-क समतु व बि-क आमन्तु व अलय-क तवक्कलतु व अला रिझकि क अफतरतु फ-त कब्बल मिन्नी।

कुर्बानी का बयान

जिस के पास साढ़े बावन तोले चाँदी या साढ़े सात तोले सोना या इतनी रकम का माल हो उस पर कुर्बानी करना वाजिब है।

कुर्बानी करना ऐसे जानवर की दुरुस्त है जिस का कान या नाक वग़ैरह तिहाई से ज्यादा न कटा हो और बहुत दुबला न हो, खुब तन्दुरुस्त हो, टांग टूटी न हो, लगंड़ा या काना न हो गरज किसी तरह का ऐब न हो, बकरा साल भर और मेंढा और दुम्बा छे महीने से कम न हो, कुर्बानी करने वाले की कुर्बानी का गोश्त खुद खाना और दोस्तों को देना फकीरों को तकसीम करना दुरुस्त है।

कर्बानी का वक्त बकरईद की नमाज़ के बाद शुरु हो जाता है। और बारहवीं तारीख की शाम के आफताब असर की नमाज़ तक रहता है।

एक बकरा कुर्बानी करना एक आदमी का दुरुस्त है और एक ऊंट या बैल एक आदमी से भी दुरुस्त है और सात आदमी भी शरीक हो सकते हैं। मगर हिस्सा सातों आदमी बराबर का दें। कुर्बानी के गोश्त के तीन हिस्से करे एक हिस्सा खुद अपने इस्तेमाल के लिये रखें और दुसरा हिस्सा अपने अज़ीज़ो दोस्तों में बाँटे और तीसरा हिस्सा गरीबों में तकसीम करे।

कुर्बानी का तरीक़ा और उस की दुआ

जब कुर्बानी के जानवर को ज़बह करने के लिए ज़मीन पर लिटादें तो यह पढ़े-

इन्नी वज्जहतु वज्हिय लिल्लज़ी फतरस समावाते वल अजीअला मिल्लते इब्राहीमा हनीफौं वमा अना मिनल मुश्रिकीन. इन्न सलाती व नुसुकी व महया य व ममाती लिल्लाहे रब्बिल आलमीन. ला शरी-क लहु व बिज़ालिक उमिर्तु व अना मिनल मुस्लिमीन.

तर्जुमा- मैं ने अपना रुख उस जात की तरफ मोड़ दिया जिस ने आसमानों और ज़मीनों को पैदा किया इस हाल में कि मैं इब्राहीम अलै. हनीफ के मज़हब पर हुँ और मैं मुश्रिकों में से नहीं हूँ। बेशक मेरी नमाज़ और इबादतें और मेरा मरना और जीना सब अल्लाह के लिए है जो रब्बुल आलमीन है जिस का कोई शरीक नहीं और मुझे उसी का हुक्म दिया गया है और मैं फरमांबर्दारो में से हुँ अय अल्लाह! यह कुर्बानी तेरी तरफ से (हुकम मिलने की वजह है) और तेरे ही लिए है।

फिर जानवर को किबला रुख बायें तरफ़ लिटायें और अपना दायां पांव उस के शाने पर रखें और तेज़ छुरी से 'बिस्मिल्लाह अल्लाह अकबर अल्लाहुम्म ल क व मिन क बिस्मिल्लाहे अल्लाहु अक्बर' कह कर ज़बह करे और अगर अपना जानवर है तो बाद जबह कहे 'अल्लाहुम्मा तक़ब्बल मिन्नी कमा तकब्बल त मिन खलीलिक इब्राहीम व हबीबि क मुहम्मदुर रसूलुल्लाहे तआला अलैहे व अला आलिही व बा रक वसल्ल्म। दुसरे का जानवर हो तो मिन्नी की जगह मिन कहने के बाद उस का नाम ले।

अकीके का बयान

जानना चाहिए कि जब लड़का पैदा हो तो उस को साफ कर के गुस्ल कराये और सफेद कपड़ा पहनाये ज़र्द कपड़े से परहेज़ करें और उस के दाहिने कान में अज़ान और बायें कान में तकबीर कहें, नाम उस का नेक रखे जैसे मुहम्मद, अब्दुल्ला, अब्दूर रहमान, अला अहमदहुसेन, शर्फुददीन वगैरह और सातवें या चौदहवीं या इककीसवें दिन या इसी हिसाब से पैदाइश के रोज़ से हिसाब लगा कर अकीकह करें कि सुन्नत है। अगर बेटा हो तो दो बकरे और बेटी हो तो एक बकरा अगर मकसुद हो तो बेटे का भी एक बकरा नज़रे अल्लाह जबह करे और एक रान उसकी दाई को दें और बाकी गोश्त का खाना पका कर अज़ीज़ों पड़ोसियों और गरीबो को खिलावें। अगर मकसुद न हो तो कच्चा गोश्त तकसीम कर दें।

एक तिहीई गोश्त अकीके का गरीबों को तकसीम करना चाहिये, नर या मादा का खयाल न करें बकरी हो या बकरा मगर जानवर सही सालिम होना चाहिए जैसा कि हुकम कुर्बानी के जानवर का है।

जनाज़े की नमाज़

जनाज़े की नमाज़ फर्ज़ कफ़ाया है। अगर कुछ लोग(बल्कि एक मर्द या एक औरत) भी पढ़ लें तो फर्ज़ अदा हो जायेगा, लेकिन जिस कद्र भी आदमी ज़्यादा हों उसी कद्र मैयत के हक में अच्छा है क्योंकि न मालूम किस की दुआ लग जाए और उस की मग्फिरत हो जाए।

हदीस शरीफ में फर्माया रसूलल्लाह अलैहे व सल्लम ने कि जो भी मुसलमान मर जाए फिर खड़े हो कर चालीस आदमी उस के जनाज़े की नमाज़ पढ़ लें जो अल्लाह के साथ किसी चीज़ को शरीक न करते हों तो अल्लाह उन की सिफारिश मैयत के हक़ में कबूल कर लेगा। *(मुस्लिम शरीफ)*

हदीस की किताब बुख़ारी शरीफ में लिखा है कि जो ईमान के साथ सवाब समझते हुए जनाज़ा के साथ चला और नमाज़ पढ़ने और दफन से फारिग होने तक उसके साथ रहा उसको दो हिस्से सवाब मिलेगा। हर हिस्सा उहद पहाड़ के बराबर होगा और जो जनाज़ें की नमाज़ पढ़ कर दफन से पहले वापस हो गया तो एक हिस्सा सवाब लेकर लौटा।

मस'ला- जनाजे की नमाज़ में चार तकबीरें और कयाम(यानी खड़ा होना) फर्ज़ है। इस नमाज़ का तरीक़ा यह है कि मैयत को आगे रख कर उस के सीने के मुक़ाबिल इमाम खड़ा हो और इमाम व मुकतदी जनाज़े की नीयत करे नीयत इस तरह है-:

नवैतु अन उसल्ली लिल्लाहे तआला सलातल जनाज़तिस सनाऊ लिल्लाहे तआला वद दुआऊ लिहाज़ल मैयिते इक्तदैतु बिहाज़ल इमामे मुत वज्जिहन इल्लकाबतिश शरीफा.

चाहे तो उर्दू में इस तरह नीयत कर लें नीयत करता हुँ मैं कि नमाज़े जनाज़े अदा करु वासते अल्लाह तआला और दुआ इस मैयत के लिए पीछे इस इमाम के रुख मेरा कआबा शरीफ की तरफ।

नीयत करके दोनों हाथ मिस्ल तकबीर तहरीमा के कानों तक उठा कर एक मरतबा उल्लाहु अकबर कह कर मिसल आम नमाज़ों के बांध लें फिर सुब्हा न अल्ला हुम्मा आखिर तक पढे

इस के बाद फिर एक बार अल्लाहु अकबर कहें, मगर इस मरतबा हाथ न अठायें बाद इस के दरुद शरीफ पढ़े बहतर यह है कि वही दरुद शरीफ पढ़ा जाय जो नमाज़ में पढ़ा जाता है फिर एक बार अल्लाहु अक्बर कहें इस मरतबा भी हाथ न उठायें इस तकबीर के बाद मैय्यत के लिए दुआ करें, अगर वह बालिग हो मर्द या औरत तो यह दुआ पढ़े।

अल्ला हुम्मग फिर लि हैयिना व मैयितिना व शाहिदिना व गाइबिना व सगीरिना व कबीरिना व ज़करिना व उन्साना।

तर्जुमा- अय अल्लाह ! तु हमारे ज़िंदों को बखश दे और हमारे मुर्दो को, और हमारे हाज़िरों को और हमारे गाइबों को और हमारे छोटों को और हमारे बड़ो को और हमारे मर्दो को और हमारी औरतो को अय अल्लाह ! हम में से जिसे ज़िंदा रखे तु उसे इस्लाम पर ज़िंदा रख और हम से जिसे मौत दे तो उसे इमान पर मौत दे।

अगर मैय्यत ना बालिग लड़की हो तो यह पढ़े।

अल्ला हुम्मज अल्हा लना फर तौवज अलहा लना अजरौं व जुखरौ वज अलहा लना शफिअ तौ व मुशफफअत.।

तर्जूमा- अय अल्लाह ! इस बच्चे को तू हमारे लिए पहले से जाकर इन्ताज़ाम करने वाला बना और इस को हमारे लिए अजर और ज़ख़ेरा और सिफ़ारिश बना दे।

अगर मैय्यत नाबालिग लड़का हो तो ये दुआ पढ़े।

अल्ला हुम्मज अल्हु लना फ र र तौं वज अल्हु लना अजरौं व जुखरौ वज अ लहु लना शाफि औ व मुशफिफआ।

तर्जुमा-: अय अल्लाह इस बच्चे को तु हमारे लिए अज

और जख़ेरा और सीफ़ारिश मंजूर किया हुआ बना दे।

जब यह दुआ पढ़ चुके तो एक मरतबा फिर अल्लाह अकबर कहें इस मरतबा भी हाथ न अठायें और इस तकबीर के बाद सलाम फेर दें।

मस'ला- अगर जूते नापाक हों तो इन को पहन कर या इन पर खड़े होकर नमाज़ जनाज़ा नहीं होती, आज कल बहुत से लोग इसका ख़याल नही करते।

मस'ला- जनाज़े की नमाज़ में तीन सफे करना मुस्तहिब है।

मस'ला- जनाज़े के साथ जाते वक्त तकबीर या किसी दुसरे ज़िकर का नारा लगाना बिदअत है।

मस'ला- नमाज़ तोड़ने वाली चीज़ो जो पहले बयान किये गये हैं, नमाज़े जनाज़ा भी उन में से किसी एक के पेश आने से टूट जाती है।

मस'ला- अगर कोई आदमी जनाज़े की नमाज़ में ऐसे वक्त आ गया कि एक दो तकबीरें हो चुकी हैं तो उस को चाहिए कि फौरन आते ही मिसल दुसरी नमाज़ो के तकबीर कह कर नमाज़ में शरीक न हो जाये बलिक इमाम की तकबीर कहे तो उसके साथ ये भी तकबीर कहे और ये तकबीर उस के हक में तकबीर -ए-तहरीमा होगी, फिर जब इमाम सलाम फेर देवे तो वह शख्स अपनी गई हुई तकबीरों को अदा कर लेवे और इन तकबीरों के दर्मियान कुछ पढ़ने की ज़रुरत नहीं

मस'ला- और अगर ऐसे वक्त में पुहँचो कि इमाम चौथी तकबीर कह चुका है तो फौरन तकबीर कह कर इमाम के सलाम

से पहले शरीक हो जावे और बाक़ी तीन तकबीरें इमाम के बाद अदा कर लेवे।

ख़त्ना

यानी सुन्नत करने का तरीका।

लड़का पैदा होने से सातवें बरस या दसवें या बारहवें बरस बहर सूरत बालिग होने से पहले करें क्योंकि लड़कपन में तकलीफ़ कम होती हैं और काफिर मुसलमान हो उस का खतना करने में उम्र की क़ैद नहीं। जब ईमान लाया खतना करना उस पर सुन्नत हुआ और जो लड़का या काफिर पैदाईशी खतना किया हुआ हो उसको लाज़िम नहीं। खतना पीर के रोज़ दोपहर के बाद करना मसनुन है और इतवार के रोज़ मकरुह है।

सज्द-ए-सहु

नमाज़ मे भूल कर कभी कमी-बेशी हो जाती है इस की तलाफी के लिए आखिरी कादा में अब्दुहु व रसुलहु तक अत्तहियात पढ़ कर दो सज्दे किये जाते हैं इस को ' सज्द-ए-सहु' कहते हैं। यानी भूल का सज्द सहु के हैं।

मस'ला- अगर किसी नमाज़ में भूल कर कई बाते ऐसी पेश आ गई जिससे सज्द-ए-सहु वाजिब होता है तो सब की तलाफी के लिए सिर्फ एक ही बार सहु के दो सजदे कर लेना काफी हैं।

मस'ला- किसी वाजिब के छूट जाने से या वाजिब या फर्ज़ मे देर हो जाने से या किसी फर्ज़ को उस की जगह से हटा कर

पहले कर देने से या किसी फर्ज़ को दोबारा अदा करने से मस्लन दो रुकअ कर दिये या रुकूअ करना भूल गये, इन सब सूरतों में सज्द-ए-सहु वाजिब हो जाता है, अगर भूले से ऐसा हुआ हो, और अगर करदन (जान बुझ कर) किया है तो सज्द-ए-सहु से काम नहीं चलेगा बल्कि नमाज़ फिर से पढ़नी पढ़ेगी।

सज्द-ए-सहू का तरीका- सज्द-ए-सहु का तरीका यह है कि आखिरी क़ादे में तशहहुद यानी अत्तहियात अब्दहु व रसूलहू तक पढ़ कर दाहिनी तरफ सलाम फेर कर अल्लाहु अकबर कहते हुए दो सज्दे कर के बैठ जावे और दोबारा पुरी अत्तहियात और इसके बाद दरुद शरीफ और दुआ पढ़ कर दोनों तरफ सलाम फेर देवे।

मस'ला- अगर दोनो तरफ सलाम फेरने के बाद याद आया कि मेरी ज़िम्मे सज्द-ए-सहू वाजिब है तो जब तक किसी से बात नही की हो और सीना क़िबले से न फेरा हो या और कोई काम ऐसा न हो गया हो जिस से नमाज़ फासिद हो जाती (यानी टूट जाती) तो अब भी सजदा कर लेवे।

मस'ला- इमाम से अगर कोई ऐसा काम हो जाये जिससे सज्द-ए-सहु वाजिब होता है तो मुक्तदीयों पर भी सज्द वाजिब होगा और मुक्तदी की भूल से न इस पर सज्द-ए-सहु वाजिब है न इमाम पर।

मस'ला- जिस की कुछ रकाअतें चली गई हों वह इमाम के सलाम के बाद जब अपनी नमाज़ पूरी करने लगे और उस वक्त कोई काम भूल से ऐसा हो जाये जिस से सज्दा-ए-सहु वाजिब हो जाता है तो आखिरी कादा में सज्दा-ए-सहू अदा करे।

फातिहा देने का तरीक़ा

फातिहा देने का तरीक़ा ये है कि अव्वल आख़िर तीन या पांच बार दरुद शरीफ पढ़ फिर सुरए-फातिहा एक बार, सुरए-काफ़रुन एक बार सुरए-इख़्लास तिन बार, सुरए फलक एक बार और सुरए-नास एक बार पढ़े। फिर हाथ उठा कर इस तरह दुआ मांगे-

अय अल्लाह जो कुछ मैंने पढ़ा है और यह खाना तेरे नाम पर खैरात किया जाता है इस का सवाब बतौर हदिया हुजूर पुरनूर हज़रत मुहम्मद मुस्तुफा सल्लल्लाहु अलैहे व अला आलिही अस्हाबिही व सल्लम को पहुंचे और उन के तुफैल में सब उम्मत को और 'फलां' शख्स को इस का सवाब पहुंचे और दरुद शरीफ पढ़ कर मुंह पर हाथ फेर लें।

फलां की जगह जिस बुज़ुर्ग' या जिस शख्स के नाम फातिहा देना मक्सूद हो उस का नाम लें।

फातिहा का अमल बुज़ुर्गाने दीन के नज़दीक मुस्तहिब क़रार दिया गया है। इस में दो बातें लाज़िम हैं-

(१) कुरआन शरीफ का पढ़ना।

(२) दुआ मांगना।

पंज वक्ता नमाज़ की रकाअतें

सुबह की नमाज़ चार रकअत

पहले दो रकअत सुन्नत, फिर दो फर्ज़ जमाअत से पढ़े।

ज़ोहर की नमाज़ १२ रकअत

पहले चार सुन्नतें,फिर चार फ़र्ज़ जमाअत के साथ फिर दो सुन्नत, फिर नफ़्ल पढ़ें

अस्र की नमाज़ ८ रकअत

पहले चार सुन्नत, फिर चार फ़र्ज़ जमाअत के साथ पढ़े।

मग़रिब की नमाज़ ७ रकअत

पहले तीन फ़र्ज़ जमाअत के साथ और फिर दो सुन्नत, फिर दो नफ़्ल।

इशा की नमाज़ १७ रकअत

पहले चार सुन्नत फिर चार फ़र्ज़ जमाअत के साथ फिर दो सुन्नत, दो नफ़्ल फिर तीन वित्र,फिर दो नफ्ल पढ़े।

नमाज़े कसर

जो शख़्स ४८ मील के सफर की नीयत से अपने शहर, कसबे या बसती से निकल जाए इस के लिए वापस आने तक ज़ोहर असर और इशा की फ़र्ज़ नमाज़ बजाए चार रकाअत के दो रकाअत रह जाती है, हां अगर सफर में किसी जगह पंदरह (१५) रोज़ या इससे ज़्यादा ठहरने की नियत कर लेवे तो पूरी चार रकाअतें पढ़ना फ़र्ज़ हो जाता हैं

नीयत नमाज़े कसर- नीयत करता हूं दो रकाअत नमाज़ फ़र्ज़ कसर वक़्ते ज़ोहर(या असर या इशा) का वास्ते अल्ला तआला के मुंह मेरा काअबे शरीफ की तरफ अल्लाह अकबर।

सफर में अगर ऐसे इमाम के साथ नमाज़ पढ़ जो वहीं का मुकिम है तो इस के साथ चार ही रकाअत नमाज़ फ़र्ज़ है।

कसर सिर्फ जोहर, असर और इशा की फर्ज़ नमाज़ों में है मग्रिब और फज्र में नहीं।

अगर मुसाफिर ने किसी जगह पहूँच कर वहां के लोगों को बजाय कसर के पुरी नमाज़ पढ़ा दी तो मुसाफिर की तो नमाज़ हो जायगी लेकिन वहां के रहने वालों की नमाज़ नहीं होगी।

मुसाफिर किसी जगह पहूँच कर वहां के लोगों का इमाम जुमा बन सकता है।

हज का बयान

इस्लाम का पांचवां रुक्न हज है, हज तमाम उर्म में एक बार फर्ज़ है और जो कोई हज का फ़र्ज़ न समझे वह काफिर है और जिस पर फर्ज़ हो और अदा न करे वह फासिक हैं यानी बड़ा गुनेहगार है।

खत्म शुद

अज़ान
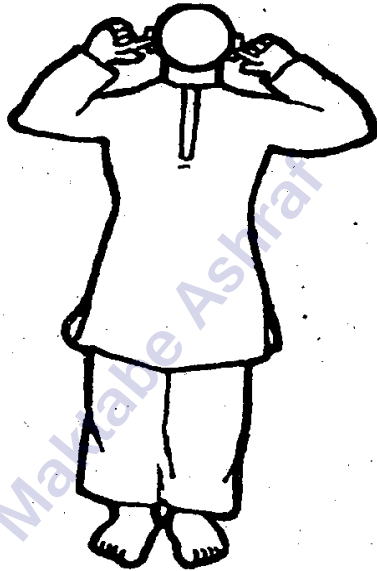
अजान

हर फर्ज़ नमाज़ की अज़ान उस के वक्त में ऊंची जगह पर किबला रुख खड़े होकर ब-आवाज़ बुलंद ठहर -ठहर कर कहो शहादत की उंगलियां कानों में रख लो हैया-अलस-सलाह कहते हुए दाई तरफ और हैया अलल-फलाह कहते हुए बाई तरफ मुंह फेरे।

तकबीरे तहरीमा
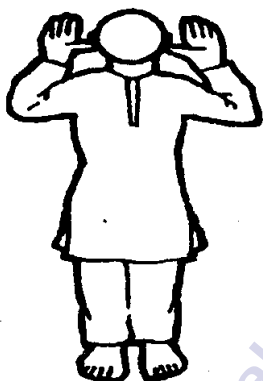
१. तहरीमा

तहरीमा के वक़्त दोनों हाथ इस तरह कानों तक उठावो कि अंगुठे कानों क़ी लौ के मुकाबिल हो और उंगलियां सीधी और खुली रहें, हथेलियां किब्ला रुख रहें और सरन को झुकाओ।

२. तकबीरे तहरीमा

यानी अल्लाहु-अकबर कह कर दोनों हाथ नाफ़ के नीचे इस तरह बांध लो कि दाहिनी हथेली बाई हथेली की पीठ पर रहे और अंगुठे और छंगुलियों के हलके से बायें पहुंचे को पकड़ लो और बाकी तीन उंगलियां कलाई पर बिछी रहें।

क्याम
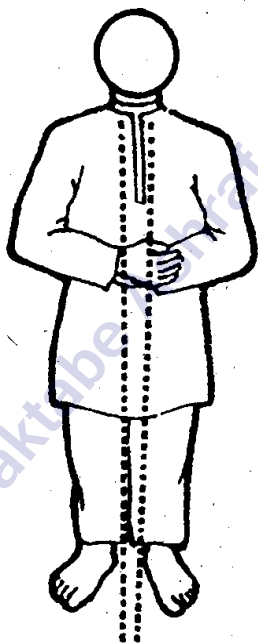
क्याम

क्याम से मुराद है ऐसा सीधा खड़ा होना कि घुटनों तक हाथ न पहुंच सके।

तहरीमा और क्याम की हालत में अपनी निगाह सज्दे की जगह रखो।

सफ और नमाज़ बा जमाअत
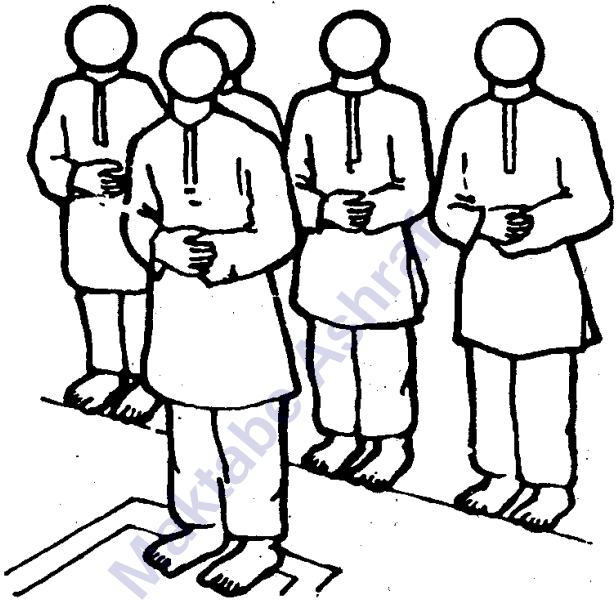
सफ और नमाज बा जमाअत

सफ बन्दी का सही तरीका यह है कि तमाम नमाज़ी कुहनी से कुहनी मिला कर सब मिल-मिल कर खड़े हों सब की पिडलियां और एड़ियां एक लाईन में हो पैरों की उंगलियां और कदम किब्ला रुख रहे, दोनों कदमों के दर्मियान चार या पांच अंगुल का फासिला रहे।
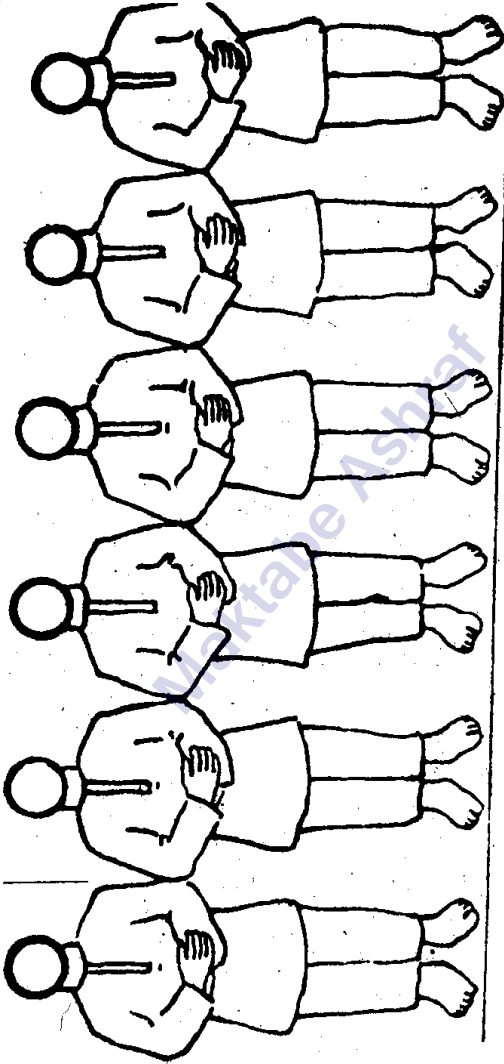
पांव की जगह उंगलियां और कदम किब्ला-रुख नहीं है
यह तरीका सहीह नहीं

रुकूअ
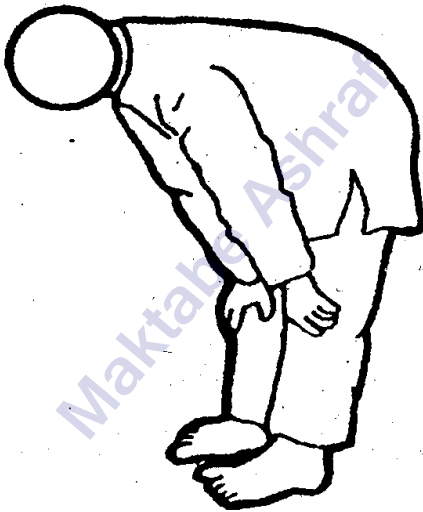
रुकुअ का सहीह तरीका यह है कि दोनों हाथों की उंगलियां खोल कर उन से दोनों घुटनों को पकड़ लो पीठ को बिलकुल सीधी रक्खो कि कमर और सर बराबर रहें हाथ पसलियों में अलग और पिंडलियां सीधी खड़ी रहे निगाह कदमों पर रहें।

सज्दा सज्दे में
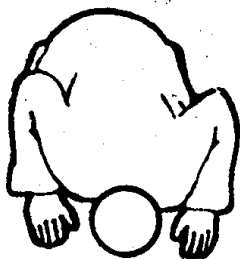
१ सज्दे में जाते हुऐ पहले दोनों घूटने फिर दोनों हाथ फिर नाक फिर पेशानी रक्खो चेहरा दोनों हथेलियों के दर्मियान रहे और अंगुठे कानों के मुकाबिल रहें हाथों की उंगलियां सीधी मिली हुई किबला रुख रहें।

२ कोहनियां पसलियों से और पेट रानों से अलग रहें कोहनिया ज़मीन पर बिछाओ, पांव की उंगलियाँ ज़मीन से मिली रहें, और कदमों को खड़ा रक्खो निगाह ज़मीन पर और ध्यान खुदा की तरफ रक्खो।

क़ाअदा   तशह.हुद
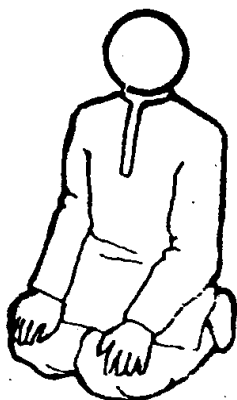
हर दुसरी रकअत में और हर आखिरी रकअत में दुसरे सजदे में से सर उठा कर बायां पांव बिछा कर उस पर बैठ जाओ और दोनों पांव की उंगलियों के सिरे किब्ला की तरफ मोड़ दो और दोनों हाथ रानों पर रक्खो इस तरह कि उंगलियां सीधी मिली हुई किब्ला रुख रहें और निगाह गोद में रहे।

२

जब अश्हदो 'अल-ला इलाहा' पर पहुंचो तो दाहिने हाथ के अंगुठे और बीच की उंगली से हलका बाँध लो और छंगुल्या और उसके पास वाली उंगली उठा कर इशारा करो,'ला इलाह पर' उंगली उठाओ और इल्लल्लाहो पर उंगली झूका दो और इस तरह आखिर तक हल्का बांधे रक्खो।

बाई तरफ सलाम दाई तरफ सलाम

१

२
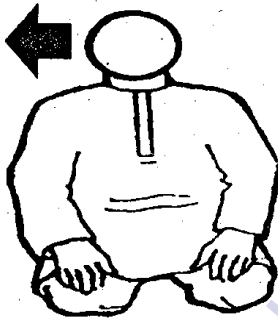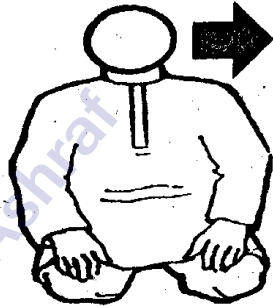
१

तशह-हुद और दरुद दुआ के बाद पहले दाई तरफ सलाम फेरो। दाई तरफ के सलाम में निगाह दांये कंधे पर रहे और दाई तरफ के फरिश्तों और नमाज़ीयों की नीयत करो, और जिस तरफ इमाम हो उस तरफ के सलाम में इमाम की भी नियत करो।

२

बाई तरफ के सलाम में बाई तरफ के फरिश्तों और नमाज़ियों की नीयत करो और निगाह बाए कंधे पर रहे। इमाम दोनों सलामों में मुक्तदीयों की नीयत करे।

दुआ
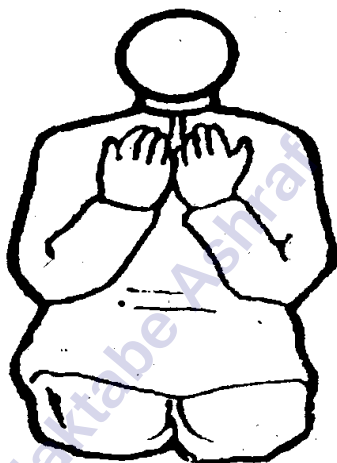
दुआ में दोनों हाथों को इस कद्र कि तयरीबन बांधे के बिल-मुका-बिल हो जाय उंगलियां सीधी और खूली रहें दोनों हाथ सीने के करीब न किये जाये बल्कि सामने की सिम्त में चढ़े हुए हो आवाज़ आहिस्ता और परस्त रहे दुआ के बाद दोनों हाथ चेहरे पर फेर लो।